साईं सृजन पटल

Website : www.sainsrijanpatal.com

मासिक ई-पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

वर्ष-3 | अंक-25 | अगस्त- 2026 | पृष्ठ-32 | नि:शुल्क

राधा रतूड़ी
आई.ए.एस. (से.नि.)
Radha Raturi
I.A.S. (Retd.)

सत्यमेव जयते
मुख्य सूचना आयुक्त
CHIEF INFORMATION COMMISSIONER

उत्तराखण्ड सूचना आयोग
सूचना का अधिकार भवन
मसूरी बाईपास (रिंग रोड)
लाडपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
Uttarakhand information commissions
R.T.I. Bhawan,
Mussoorie Bypass (Ring Road)
Ladpur, Dehradun, Uttarakhand
Phone : (Off) : 0135-2662021, 2662180

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि **'साई सृजन पटल'** मासिक पत्रिका अपने प्रकाशन के 25वें अंक के साथ एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुँच रही है। इस अवसर पर पत्रिका के संपादक, सहयोगियों एवं समस्त पाठकों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

उत्तराखण्ड की पहचान केवल इसकी हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं, नदियों और प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं, बल्कि यहाँ की समृद्ध लोक–संस्कृति, परम्पराओं, लोकभाषाओं, लोककथाओं, कला, साहित्य और जीवन–मूल्यों से भी है। समय के साथ बदलती जीवनशैली और सामाजिक परिस्थितियों के बीच इस सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और भावी पीढ़ी तक पहुँचाना हम सभी का दायित्व है। इस दृष्टि से 'साई सृजन पटल' का उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विरासत को संकलित एवं अभिलेखित कर जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसे प्रयास हमें अपनी जड़ों से जोड़ने के साथ–साथ उन सामूहिक स्मृतियों को भी सुरक्षित रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाते हैं, जिनमें किसी समाज की वास्तविक पहचान निहित होती है। पत्रिका का 25वाँ अंक इस सतत एवं सार्थक यात्रा की एक उपलब्धि है। आशा है कि 'साई सृजन पटल' भविष्य में भी उत्तराखण्ड के लोकजीवन, संस्कृति और विरासत के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता रहेगा तथा नए रचनाकारों और शोधकर्ताओं को भी मंच प्रदान करेगा।

(राधा रतूड़ी)
मुख्य सूचना आयुक्त

संपादकीय

साईं सृजन पटल पत्रिका का 25 वां अंक हमारी इस साहित्यिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जो हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है। इस अंक में संकलित लेख – अष्ट भैरव,नुड़ाई मेला और 'सुमाड़ी कु पंथ्या दादा' हमें अपनी समृद्ध विरासत से जोड़े रखते हैं। अगस्त माह में अनेक प्रतिभाएं सम्मानित हुई हैं, इससे संबंधित तीलू रौतेली सम्मान, प्रो.डी.आर.पुरोहित को स्व.इन्द्रमणि बडोनी स्मृति सम्मान, बहुमुखी प्रतिभा विदुषी निशंक को दिल्ली गौरव सम्मान व पावनी छाबड़ा को मिस टीन टूरिज्म ग्लोबल सम्मान पर भी सामग्री उपलब्ध है। समसामयिक लेख 'मुख्यमंत्री युवा विद्यार्थी मंथन' में उत्तराखंड के जेन–जी से सीएम का सीधा संवाद भी महत्वपूर्ण है। इसके अलावा खतरनाक गाजर घास, सखी वन स्टॉप सेंटर, हमारा लीवर, शुद्ध भोजन–हवा,अंतरिक्ष यात्री कैप्टन शुभांशु शुक्ला,एआई फॉर ऑल,संविधान चित्र प्रदर्शनी,पुस्तक समीक्षा –'उम्मीदों के सिक्के', हास्य सम्राट स्व. घनानन्द 'घन्ना भाई' व साईं सृजन पटल के द्वितीय स्थापना दिवस समारोह से संबंधित आलेख इस अंक का हिस्सा बने हैं। हरिद्वार के तीर्थ पुरोहितों द्वारा संरक्षित 'वंशावली बहियों' पर शोधपरक लेख भी लिखा गया है। प्रदेश की मुख्य सूचना आयुक्त श्रीमती राधा रतूड़ी जी से प्राप्त संदेश से जहां एक ओर मनोबल बढ़ा है वहीं दूसरी ओर और अधिक जिम्मेदारी से काम करने का दायित्वबोध भी हो रहा है।

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

www.sainsrijanpatal.com

साईं
सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक

प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो. 9412142822
ई–मेलः sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक

अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक

अमन तलवाड़
मो. 7300883189
द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ. अनूप वीरेन्द्र कठैत (लेखक/अभिनेता)
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण, साहित्यकार
वैष्णवी लोहनी, मॉडल/अभिनेत्री

आवरण पृष्ठ

पृष्ठभूमि में गंगोत्री मार्ग, इन्सेट में 'युवा विद्यार्थी मंथन' में सेल्फी लेते हुए सीएम, सिंगल यूज प्लास्टिक का विकल्प 'जूट बैग' दिखाती मॉडल वैष्णवी लोहनी,नीतू रानी को तीलू रौतेली सम्मान प्रदान करते हुए सीएम और मोरी (जनपद उत्तरकाशी) में ध्याणी मिलन समारोह में पारंपरिक–सामूहिक नृत्य।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं,
जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अल्मोड़ा के रक्षक अष्ट भैरव

आस्था

उत्तराखण्ड राज्य को देवभूमि कहा जाता है, वास्तव में ये देवताओं की नगरी है जहाँ, पग–पग पर देवताओं का वास है, शायद यही कारण है कि अनेक आपदाओं का सामना करने के बाद भी राज्य अपने अस्तित्व को बनाए हुए है,राज्य में स्थित चार धाम ,हरि की नगरी हरिद्वार, योग नगरी ऋषिकेश, मृत्युंजय मंदिर जागेश्वर, गोलू देवता का मंदिर, सूर्य मंदिर कटारमल कोसी तथा अनेक मातृ शक्ति पीठ आज पूरे विश्व में अपनी एक पहचान बनाए हुए हैं। इसके अतिरिक्त उत्तराखंड में आज अनेक ऐसे देवी–देवता विराजमान हो कर इसकी रक्षा कर रहे हैं, जिनके विषय में लोगों को बहुत अधिक जानकारी ही नहीं है।

इस माह एक ऐसे ही अनछुए पहलू तक आपको ले जाना चाहती हूँ, जिसका सम्बन्ध कुमाऊँ की अल्मोड़ा नगरी से है। श्री बद्रीदत्त पाण्डेय जी द्वारा लिखित 'कुमाऊँ का इतिहास' पुस्तक से प्राप्त जानकारी के अनुसार अल्मोड़ा नगर कासाय पर्वत पर बसा हुआ है। भगवान शिव के द्वारा इस पर्वत पर तपस्या की गई। इसीलिए इस नगर का ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व है और देवी–देवता स्थापित हैं। शायद यही कारण था की चंद शासकों के वंशज बालों कल्याण चन्द ने 1563 ईसवी में अल्मोड़ा को अपनी राजधानी बनाया। अल्मोड़ा को सांस्कृतिक नगरी और ताम्र नगरी के नाम भी जाना जाता है साथ ही इसे अष्ठ भैरव की नगरी भी कहा जाता है। इस क्षेत्र में अष्ट भैरवों की स्थापना के पीछे अनेक कथाएं प्रचलित हैं। आस्था के अनुसार इन्हें शिव के स्वरूप में पूजा जाता है। स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, इनका निर्माण उद्योगचंद के शासनकाल में हुए एक शाही षड्यंत्र से जुड़ा है जिसके अनुसार राजपरिवार के पुत्र भोलानाथ, जिन्होंने राजजीवन का त्याग करके साधु का जीवन व्यतीत किया था, उनकी गर्भवती पत्नी के साथ निर्मम हत्या कर दी गई थी। उनकी इस दुखद हत्या के बाद, उनकी तथा गर्भस्थ शिशु की अशांत आत्माओं ने राज्य में भीषण अशांति उत्पन्न कर दी। उनकी आत्मा के क्रोध को शांत करने तथा जनमानस की रक्षा के लिए, चंद शासकों ने उनके अवशेषों के कुछ हिस्सों को शहर के आठ महत्वपूर्ण प्रवेश द्वारों पर दफना दिया और उन्हीं स्थानों पर इन आठ भैरव मंदिरों का निर्माण करवाया। भोलानाथ जी को कुमाऊँ में इष्ट देव के रूप में पूजा जाता है। मान्यता है कि ये आठ भैरव रक्षक के रूप में आठ द्वारों की रक्षा करते हैं और निवासियों की रक्षा करते हैं। इनमें काल भैरव, बटुक भैरव, शै भैरव (शंकर भैरव), बाल भैरव, गणेश भैरव, गढ़ी भैरव, खुटकुनी भैरव और गौर भैरव हैं। पौराणिक मान्यताओं के आधार पर इन्हें पर्वतीय समाज के लौकिक देवताओं का स्थान प्राप्त है। इन मंदिरों की स्थापना चंद शासक उद्यान चंद (1678–1698) के द्वारा की गई थी। जो की चंद वंश का एक धार्मिक शासक माना जाता है। इसके पश्चात भी चन्द शासकों के वंशजों ने इन देवताओं के

मंदिरों की प्रतिष्ठा को जीवन्त रखा और तभी से अष्ट भैरव नगर के संरक्षक के रूप में पूजे जाते हैं। इनमें से कुछ मंदिर शहर के मध्य और कुछ सीमावर्ती स्थानों में हैं।

1. **काल भैरव** – काल भैरव का मंदिर शहर के मध्य में खजांची मौहल्ला में स्थित है। ख़जांची मोहल्ला स्थान का नाम उस स्थान पर तत्कालीन समय के बैंकों व कारोबारी सुनारों के कारण पड़ा है। इसके समीप ही राजा का महल है जो कि मल्ला महल के नाम से जाना जाता है (कई वर्षों से इस स्थान पर कचहरी स्थापित की गई थी जिसे वर्तमान ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संरक्षित किया गया है)। इस महल के पास ही राजा रुद्रचंद ने इस मंदिर का निर्माण कराया था। एटकिंसन के गजट से प्राप्त जानकारी के अनुसार अंग्रेजों द्वारा इस भैरव मंदिर को महल से बाहर पुनर्स्थापित किया गया था।
2. **बटुक भैरव** – ये भैरव मन्दिर अल्मोड़ा की बाजार के अंतिम छोर पर स्थित है जो कि शहर का दक्षिण दिशा का प्रवेश द्वार माना जाता है। इसके पश्चात कैंट क्षेत्र प्रारंभ होता है। बाजार को पलटन बाजार कहा जाता है। इस मंदिर को भोलानाथ मंदिर और गढ़ी भैरव भी कहा जाता है।
3. **शै भैरव**– लाला बाजार में स्थित ये ही एकमात्र मंदिर है जिसकी रचना मंदिर के समान की गई है जिसमें वास्तविक रुप से प्रतिमा स्थापित है तथा प्रदक्षिणा पथ बनाए गए हैं। माना जाता है कि इस स्थान पर पहले से मंदिर रहा होगा और उसमें देवता को स्थापित किया गया होगा।
4. **बाल भैरव** –अल्मोड़ा के माल रोड पर स्थित चौघानपाटा नामक स्थान पर ये मंदिर स्थित है। इसे आनंद भैरव की नाम से भी जानते हैं।
5. **खुटकुनी भैरव** – ये भैरव मंदिर लक्ष्मेश्वर नामक स्थान में स्थित है ,जो कि शहर की उत्तर दिशा का प्रवेश द्वार माना जाता है। ये मंदिर क्षेत्र का सर्व प्रसिद्ध मन्दिर है।
6. **गौर भैरव** – ये मन्दिर माल रोड के निकट ,थपलिया नामक स्थान पर स्थित है।
7. **शंकर भैरव** – ये मंदिर भी शहर के मध्य भाग में स्थित है। इस स्थान पर पीपल का पेड़ होने के कारण वर्तमान में शनि देव का मंदिर भी स्थापित किया गया है। यह मंदिर माल रोड स्थित स्टेट बैंक की मुख्य शाखा के पास स्थित है।
8. **गणेश भैरव**– ये भैरव अल्मोड़ा के प्रसिद्ध नंदादेवी के मंदिर के समीप स्थित है। इसकी आकृति गणेश भगवान की तरह होने के कारण ही शायद इसका नाम गणेश भैरव पड़ा होगा।

इन भैरव मंदिरों की एक विशेषता ये देखने मिलती है कि, इनका निश्चित स्वरूप या आकार नहीं है। हर मंदिर के देवता की आकृति विभिन्न रूप में मिलती है। इनमें प्रतिमाओं के स्थान पर पत्थरों की कुछ टेढ़ी–मेढ़ी आकृति पायी जाती हैं जिन्हें धीरे–धीरे एक आकार प्रदान कर दिया गया है। इन सभी मन्दिरों में शनिवार के दिन पूजा की जाती है और प्रत्येक वर्ष भैरव अष्टमी के दिन इन सभी मंदिरों में विशेष पूजा, हवन और भंडारे का भव्य आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु हिस्सा लेते हैं। आस्था के प्रतीक इन अष्ट भैरवों में क्षेत्र की जनता की अटूट आस्था है इसीलिए इन सभी मन्दिरों को नगरवासियों ने पूर्ण रूप से संरक्षित किया है और विधि विधान से निरन्तर पूजा अर्चना कि जाती है। स्थानीय लोगों की श्रद्धा और विश्वास के कारण ही सदियाँ गुजरने के बाद भी ये देवता अपने स्थान पर सुरक्षित हैं। इतिहास में चाहे कुछ भी घटित हुआ हो लेकिन हमारी श्रद्धा, भक्ति और आस्था ने ही उत्तराखण्ड को देवस्थान बनाया है।

विशेष संदर्भः 1. श्री बद्रीदत्त पाण्डेय द्वारा लिखित कुमाऊँ का इतिहास पुस्तक तथा
2–एटकिंसन का गजट (ऑनलाइन)

प्रस्तुति : डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

स्वास्थ्य

भविष्य की असली लग्ज़री

शुद्ध भोजन और स्वच्छ हवा

आजकल के तेज रफ्तार जीवन में, हम अक्सर यही सोचते हैं कि असली संपत्ति वही है जो बैंक खाते में जमा हो या हमारे पास भौतिक रूप में हो। लेकिन अगर हम सही से सोचें, तो असली संपत्ति वह है जो हमारी सेहत और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है और वह है शुद्ध भोजन और स्वच्छ हवा। अगले 15–20 वर्षों में हम पाएंगे कि पैसे की परिभाषा बदलने वाली है। पहले जैसे दौलत और भौतिक वस्तुएं महत्त्वपूर्ण थीं, अब शुद्ध और स्वच्छ जीवन जीने की प्रवृत्तियां ज्यादा मायने रखेंगी। वर्तमान में कृषि में रासायनिक खादों का अत्यधिक उपयोग हो रहा है। हर फसल में रासायनिक खाद डाली जा रही है, जिससे उत्पादन तो बढ़ता है, लेकिन खाद्य सामग्री की शुद्धता और सेहत पर विपरीत असर पड़ता है। पहले हमारे पास देसी बीज थे जो बिना रसायन के, प्राकृतिक तरीके से उगते थे। वे फसलें जीवनदायिनी होती थीं, लेकिन अब हाइब्रिड बीज और जीएम (जीन संशोधित) बीजों ने कृषि क्षेत्र को एक नए दिशा में मोड़ दिया है, जो अधिक से अधिक रसायन और यूरिया खींचते हैं। गन्ने और गुड़ का उदाहरण लें तो यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि हम जो शुद्ध और प्राकृतिक समझते हैं, वह भी अब रसायनों से घिरा हुआ है। गुड़ में चमक लाने के लिए जो रसायन डाले जाते हैं, वे हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं। यही स्थिति जलेबी और अन्य मिठाइयों की भी है, एक जैसी चमकदार दिखने वाली चीजों में अक्सर रसायनों की भरमार होती है।

यह साफ है कि आज के समय में जो चीज शुद्ध, असमान और प्राकृतिक दिखती है, वही सबसे सुरक्षित होती है। हमें अपनी जागरूकता को बढ़ाने की आवश्यकता है, खासकर जब हम अपने भोजन की गुणवत्ता और शुद्धता की बात करते हैं। हमें यह जानने की जरूरत है कि हमारा भोजन कहाँ से आया है, कैसे उगा है और उसमें कितने रसायन मिलाए गए हैं।

जैसा कि हम जानते हैं, भारत में हाइब्रिड बीजों का प्रचलन तेजी से बढ़ा है और अब जीएम बीज भी कृषि क्षेत्र में तेजी से प्रवेश करने की ओर अग्रसर हैं। यह स्थिति निश्चित रूप से हमारे भोजन के प्राकृतिक स्वरूप को प्रभावित करेगी, और हमें इससे बचने के उपायों पर ध्यान केंद्रित करना होगा। आज के दौर में, जहाँ एक ओर हम हाइब्रिड और जीएम बीजों की ओर बढ़ रहे हैं, वहीं हमें देशी बीजों और

प्राकृतिक खेती की ओर भी लौटने की जरूरत है। देशी बीज आत्मनिर्भरता और पोषण का प्रतीक होते हैं, जो बिना रासायनों के उगाए जाते हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम पुनः शुद्ध भोजन और प्राकृतिक खेती की ओर कदम बढ़ाएं, ताकि हम एक स्वस्थ और रोगमुक्त जीवन जी सकें। आने वाले समय में सबसे अधिक मूल्यवान वह होगा जो हमारी सेहत को पोषित करे–स्वच्छ हवा, शुद्ध भोजन और प्राकृतिक जीवन। इसलिए भविष्य की असली लग्जरी केवल पैसे में नहीं, बल्कि हमारे प्लेट में है। यही असली संपत्ति होगी।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उप संपादक

AI लोक भवन में राज्यपाल ने किया शुभारंभ

'एआई फॉर ऑल' से मिलेगी रोजगारोन्मुखी शिक्षा

उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह ने 31 जुलाई को राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थियों के लिए "AI-for-All" पहल का शुभारंभ किया। इस पहल का संचालन दून विश्वविद्यालय द्वारा आईआईटी मद्रास, स्वयं प्लस (SWAYAM Plus)तथा आईआईटीएम–प्रवर्तक टेक्नोलॉजीज फाउंडेशन के सहयोग से किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन लोक भवन, देहरादून में आयोजित किया गया। इस अवसर पर आईआईटी मद्रास के निदेशक पद्मश्री प्रो. वी. कामकोटी तथा दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने सहयोग संबंधी समझौता (MoU) पर हस्ताक्षर एवं आदान–प्रदान किया। राज्यपाल ने कहा कि इस संयुक्त पहल के प्रथम चरण में निम्नलिखित एआई आधारित पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जाएंगे।

- Python के माध्यम से AI/ML
- फिजिक्स में AI
- अकाउंटिंग में AI
- केमिस्ट्री में AI
- शिक्षकों के लिए AI
- इंजीनियर बनने की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए AI

ये पाठ्यक्रम उत्तराखंड के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को SWAYAM Plus और IITM Pravartak Technologies Foundation के माध्यम से उपलब्ध कराए जाएंगे।

राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखंड एक हिमालयी राज्य है जिसकी सीमाएँ नेपाल और चीन से लगती हैं। राज्य में 11 राजकीय विश्वविद्यालय हैं, जिनमें दून विश्वविद्यालय, उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय, जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय, वीसीएसजी उत्तराखंड औद्योगिक एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय तथा एचएनबी उत्तराखंड चिकित्सा शिक्षा विश्वविद्यालय शामिल हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में 100 से अधिक राजकीय महाविद्यालय, 30 से अधिक निजी विश्वविद्यालय, 1 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 1 NIT, 1 AIIMS, 1 IIM, 1 IIIT, 1 DST संस्थान, 1 CSIR संस्थान, 3 DRDO प्रयोगशालाएँ तथा अन्य केंद्रीय संस्थान भी कार्यरत हैं। इन सभी संस्थानों के विद्यार्थियों को इस पहल का लाभ मिलेगा। पद्मश्री प्रो. वी.कामाकोटी ने कहा कि SWAYAM

Plus भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की एक महत्त्वपूर्ण पहल है, जिसे देशभर में आईआईटी मद्रास लागू कर रहा है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली तथा रोजगारोन्मुख शिक्षा उपलब्ध कराना है। दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने कहा कि प्रो. कामाकोटी शिक्षा जगत के साथ–साथ संसद में भी लोकप्रिय हैं। उन्होंने कहा कि उनका प्रत्येक दूसरा विचार देश की प्रगति और विकास को समर्पित होता है। आईआईटी मद्रास लगातार कई वर्षों से NIRF रैंकिंग में प्रथम स्थान पर बना हुआ है।

SWAYAM Plus के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. आर. सारथी ने बताया कि उत्तराखंड में दून विश्वविद्यालय को आईआईटी मद्रास का नोडल पार्टनर बनाया गया है। इसके माध्यम से राज्य के विद्यार्थियों को SWAYAM Plus तथा IITM Pravartak Technologies Foundation का पूरा सहयोग मिलेगा। यह फाउंडेशन सेंसर, नेटवर्किंग, एक्चुएटर्स एवं कंट्रोल सिस्टम्स (SNACS) क्षेत्र में तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने वाला सेक्शन–8 संगठन है। कार्यक्रम में उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. त्रिप्ता ठाकुर, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अंबरीश कुमार महाजन, सीएसआईआर– आईआईपी, देहरादून के निदेशक डॉ. हरेंद्र सिंह बिष्ट, SWAYAM Plus के पीएमयू प्रमुख दक्षिणामूर्ति वी., IITM Pravartak के मुख्य मानव संसाधन अधिकारी रामू गोविंदन, दून विश्वविद्यालय के कुलसचिव दुर्गेश डिमरी सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के डीन एवं विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

उपलब्धि

दिल्ली गौरव सम्मान-2026 से नवाजी गई 'विदुषी निशंक'

उत्तराखंड की बेटी एवं अधिवक्ता विदुषी निशंक को शिक्षा, न्याय,साहित्य और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रथम 'दिल्ली गौरव सम्मान–2026' से सम्मानित किया गया। नई दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय के सभागार में संस्कृति युवा संस्था एवं इंडियन ग्लोबल फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में यह सम्मान समारोह आयोजित हुआ।

समारोह में केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री कलराज मिश्र,उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ.रमेश पोखरियाल निशंक तथा संस्कृति युवा संस्था के अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा ने विदुषी को यह सम्मान दिया। पेशे से अधिवक्ता विदुषी भारत के प्रथम 'लेखक गांव' की निदेशक हैं और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। अपनी स्वर्गीय माता की स्मृति में स्थापित कुसुम कांता फाउंडेशन के माध्यम से वह शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवा से जुड़े कार्यों में सक्रिय हैं। उल्लेखनीय है कि विधि में स्वर्ण पदक विजेता विदुषी निशंक ने यूनिवर्सिटीज ऑफ कैम्ब्रिज से एलएलएम किया है। वह यूनिवर्सिटीज ऑफ ऑक्सफोर्ड के लिए कामनवेल्थ स्कॉलर भी रही हैं।

प्रस्तुति - प्रो.जानकी पंवार,
सदस्य सलाहकार मंडल, साईं सृजन पटल

हस्तलिखित अभिलेख

कई पीढ़ियों का इतिहास संरक्षित रखने वाले

हरिद्वार के तीर्थ पुरोहित (पंडा) और उनकी बहियाँ

भारतीय संस्कृति में तीर्थ केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं रहे हैं, बल्कि उन्होंने सामाजिक स्मृति, सांस्कृतिक निरंतरता और ऐतिहासिक परंपराओं को भी सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । हरिद्वार उन प्राचीन तीर्थों में से एक है जहाँ सदियों से देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु अपने धार्मिक संस्कारों के लिए आते रहे हैं । गंगा स्नान, अस्थि विसर्जन, श्राद्ध, पिंडदान और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के साथ यहाँ एक ऐसी परंपरा भी जीवित है, जो इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों और मानवशास्त्रियों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। यह परंपरा है तीर्थ पुरोहितों तथा उनके द्वारा संरक्षित वंशावली बहियों की ।

इस विषय को समझने के उद्देश्य से विष्णु घाट, हरिद्वार के वरिष्ठ तीर्थ सिंधी पुरोहित गौरव श्रीकुंज जी से विस्तृत बातचीत की गई। चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि अधिकांश लोग तीर्थ पुरोहितों को केवल धार्मिक अनुष्ठान कराने वाले पुरोहित के रूप में जानते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि वे पीढ़ियों से भारतीय परिवारों की वंशावली, सामाजिक इतिहास और सांस्कृतिक स्मृति के संरक्षक भी रहे हैं । उन्होंने बताया कि हर बही केवल नामों का रजिस्टर नहीं होती, बल्कि अनेक परिवारों की कई पीढ़ियों का जीवंत इतिहास अपने भीतर समेटे रहती है ।

पंडित गौरव श्रीकुंज ने बताया कि उनका परिवार मूलतः सिंध प्रांत के श्रद्धालुओं का तीर्थ पुरोहित रहा है । उनके संरक्षण में आज भी सिंध से संबंधित हजारों परिवारों की वंशावलियाँ सुरक्षित हैं । उन्होंने बताया कि उनके पास संरक्षित अनेक बहियाँ लगभग 150 से 200 वर्ष पुरानी हैं, जिनमें कई पीढ़ियों का क्रमबद्ध विवरण आज भी सुरक्षित है । इन बहियों में परिवारों के नाम, गोत्र, मूल निवास, पारिवारिक संबंध, जन्म–मृत्यु, विवाह तथा हरिद्वार आगमन का विवरण नियमित रूप से दर्ज किया जाता रहा है । उन्होंने विशेष रूप से उल्लेख किया कि भारत–विभाजन के बाद सिंध से विस्थापित होकर भारत के विभिन्न राज्यों में बसे अनेक परिवारों का विवरण भी इन्हीं बहियों में सुरक्षित है, जिसके आधार पर उनके मूल निवास और पारिवारिक इतिहास का पता लगाया जा सकता है।

चर्चा के दौरान उन्होंने हरिद्वार की तीर्थ पुरोहित परंपरा की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। उनके अनुसार प्रत्येक प्रांत, क्षेत्र अथवा समुदाय के अलग–अलग तीर्थ पुरोहित होते हैं । सिंध, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, बंगाल तथा देश के अन्य क्षेत्रों के श्रद्धालुओं के लिए अलग–अलग पुरोहित परिवार पीढ़ियों से कार्य करते आ रहे हैं । प्रत्येक पुरोहित अपने निर्धारित यजमानों की बहियों का संरक्षण करता है और उन्हीं में समय–समय पर नई प्रविष्टियाँ जोड़ता है । यही कारण है कि कोई परिवार यदि कई दशकों अथवा कई पीढ़ियों के बाद भी हरिद्वार आता है, तो उसकी वंशावली उसी परंपरागत तीर्थ पुरोहित की बही में सुरक्षित मिल जाती है । यह व्यवस्था भारतीय समाज की वंशानुगत स्मृति को सुरक्षित रखने की एक अद्वितीय प्रणाली है ।

तीर्थ पुरोहित और उनकी कार्यप्रणाली

पंडित गौरव श्रीकुंज के अनुसार प्रत्येक तीर्थ पुरोहित का अपना निश्चित यजमान क्षेत्र होता है । जब कोई श्रद्धालु हरिद्वार पहुँचता है, तो सबसे पहले उसके गाँव, जिला, गोत्र तथा पूर्वजों के बारे में जानकारी ली जाती है । इन्हीं सूचनाओं के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि वह किस तीर्थ पुरोहित के यजमान हैं । यदि परिवार पहले भी हरिद्वार आया हो, तो संबंधित

बही निकालकर उसकी पुरानी प्रविष्टियाँ देखी जाती हैं ।

पुरोहित परिवार को बताते हैं कि उनके पूर्वज कब हरिद्वार आए थे, किस उद्देश्य से आए थे, किसने हस्ताक्षर किए थे और उस समय परिवार में कौन–कौन सदस्य थे । इसके बाद वर्तमान यात्रा की नई प्रविष्टि दर्ज की जाती है, जिसमें परिवार के नए सदस्यों, जन्म, मृत्यु, विवाह, निवास परिवर्तन तथा अन्य महत्वपूर्ण विवरण लिखे जाते हैं । अंत में परिवार का कोई सदस्य हस्ताक्षर अथवा अंगूठे का निशान दर्ज करता है । इसके पश्चात गंगा स्नान, श्राद्ध, पिंडदान, अस्थि विसर्जन, तर्पण अथवा अन्य धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराए जाते हैं ।

वंशावली बहियों का स्वरूप

पंडित गौरव श्रीकुंज ने बताया कि बहियाँ साधारण रजिस्टर नहीं होतीं । ये हस्तलिखित अभिलेख हैं, जिनमें कई पीढ़ियों का क्रमबद्ध विवरण सुरक्षित रहता है । इनमें परिवार के मुखिया का नाम, पिता तथा दादा का नाम, गोत्र, मूल निवास, परिवार के सदस्यों का विवरण, विवाह संबंध, जन्म–मृत्यु तथा हरिद्वार आगमन की तिथियाँ दर्ज रहती हैं । अनेक बहियों में विक्रम संवत तथा अंग्रेजी वर्ष दोनों का उल्लेख मिलता है । प्रत्येक यात्रा के साथ नई प्रविष्टियाँ जुड़ती रहती हैं, जिससे एक ही परिवार का कई पीढ़ियों तक का इतिहास सुरक्षित हो जाता है।

इतिहास लेखन में बहियों का महत्व

जब उनसे इतिहास की दृष्टि से इन बहियों के महत्व के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि यदि इतिहासकार इन अभिलेखों का व्यवस्थित अध्ययन करें तो भारतीय समाज के अनेक ऐसे पक्ष सामने आ सकते हैं जो अन्य स्रोतों में उपलब्ध नहीं हैं । इन बहियों से परिवारों की वंशावली, प्रवासन, विवाह संबंध, सामाजिक परिवर्तन तथा विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक संपर्कों का अध्ययन किया जा सकता है ।

उन्होंने विशेष रूप से बताया कि भारत–विभाजन के बाद पाकिस्तान से आए अनेक परिवारों ने हरिद्वार में अपनी नई प्रविष्टियाँ दर्ज कराईं । सिंध प्रांत से आए परिवारों की पुरानी और नई दोनों जानकारियाँ इन बहियों में उपलब्ध हैं । इस कारण विभाजन, विस्थापन और पुनर्वास के सामाजिक इतिहास के अध्ययन में भी ये अभिलेख अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं ।

उनके अनुसार इन बहियों से केवल परिवारों का इतिहास ही नहीं, बल्कि स्थानीय इतिहास, जनसंख्या परिवर्तन, सामाजिक संरचना, विवाह संबंधों के विस्तार तथा सांस्कृतिक निरंतरता का भी अध्ययन किया जा सकता है । कई ऐसे गाँव और परिवार, जिनका विवरण अन्यत्र उपलब्ध नहीं है, उनकी जानकारी इन बहियों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है ।

संरक्षण की आवश्यकता

पंडित गौरव श्रीकुंज ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि समय के साथ इन बहियों के संरक्षण की चुनौती बढ़ती जा रही है । पुराना कागज नमी, दीमक और समय के प्रभाव से क्षतिग्रस्त हो सकता है । उनका मानना है कि इन बहियों का वैज्ञानिक संरक्षण तथा डिजिटलीकरण समय की आवश्यकता है । यदि इनका उच्च गुणवत्ता के साथ डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाए, तो यह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सकेगी और शोधार्थियों को भी इसका लाभ मिलेगा । विष्णु घाट, हरिद्वार के वरिष्ठ तीर्थ पुरोहित से हुई इस बातचीत से यह स्पष्ट होता है कि हरिद्वार के तीर्थ पुरोहित केवल धार्मिक कर्मकांड के संचालक नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज की ऐतिहासिक स्मृति के संरक्षक भी हैं । विशेष रूप से सिंध प्रांत जैसे क्षेत्रों से संबंधित उनके पास सुरक्षित 150 से 200 वर्ष पुरानी वंशावली बहियाँ भारतीय इतिहास, समाज और संस्कृति के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं । प्रत्येक प्रांत के अलग–अलग तीर्थ पुरोहितों द्वारा अपनी– अपनी बहियों का पीढ़ियों से संरक्षण करना भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अनूठी व्यवस्था है, जिसकी तुलना विश्व की बहुत कम परंपराओं से की जा सकती है । इन बहियों में केवल परिवारों का विवरण नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक निरंतरता, प्रवासन, विभाजन और पारिवारिक इतिहास की अमूल्य जानकारी सुरक्षित है । यदि इन बहियों का व्यवस्थित संरक्षण, डिजिटलीकरण और शैक्षणिक अध्ययन किया जाए, तो भारतीय इतिहास लेखन को अनेक नए स्रोत प्राप्त हो सकते हैं । इसलिए हरिद्वार की तीर्थ पुरोहित परंपरा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का एक अमूल्य दस्तावेज है, जिसे संरक्षित करना आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है ।

स्रोतः विष्णु घाट, हरिद्वार के वरिष्ठ तीर्थ पुरोहित पंडित श्री गौरव श्रीकुंज जी से डॉ. संजीव कुमार शर्मा द्वारा लिया गया व्यक्तिगत साक्षात्कार।

प्रस्तुति: डॉ.संजीव कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र,
राजकीय महाविद्यालय,भूपतवाला
हरिद्वार

बड़े सपने दृढ़ संकल्प और निरंतर मेहनत ही सफलता की असली उड़ान

एम्स ऋषिकेश में अंतरिक्ष यात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने युवाओं में भरा वैज्ञानिक सोच और राष्ट्र निर्माण का उत्साह

यदि लक्ष्य ऊँचा हो, संकल्प अटल हो और प्रयास निरंतर हों, तो कोई भी मंजिल असंभव नहीं रहती। भारत के प्रतिष्ठित अंतरिक्ष यात्री एवं भारतीय वायु सेना के वरिष्ठ फाइटर पायलट ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने एम्स ऋषिकेश में आयोजित प्रेरक संवाद कार्यक्रम के दौरान छात्रों को यही संदेश दिया। उन्होंने कहा कि देश के युवाओं में अपार क्षमता है और यदि वे बड़े सपने देखने का साहस करें तथा उन्हें पूरा करने के लिए निरंतर मेहनत करें, तो भारत विज्ञान, अनुसंधान और अंतरिक्ष के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व कर सकता है।

एम्स ऋषिकेश के मुख्य ऑडिटोरियम में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में आसपास के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने अपने जीवन की प्रेरणादायक यात्रा साझा करते हुए बताया कि एक साधारण विद्यार्थी से भारतीय वायु सेना के फाइटर पायलट और फिर अंतरिक्ष यात्री बनने तक का सफर अनुशासन, धैर्य, कठिन परिश्रम और दृढ़ संकल्प का परिणाम है। उन्होंने कहा कि चुनौतियों से घबराने के बजाय उन्हें सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

उन्होंने अंतरिक्ष मिशन की जटिल चयन प्रक्रिया, कठोर प्रशिक्षण मानसिक एवं शारीरिक तैयारी, मेडिकल इमरजेंसी प्रशिक्षण गुरुत्वाकर्षण एवं भारहीनता से जुड़े वैज्ञानिक अनुभवों तथा अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) तक की अपनी यात्रा को वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने से शरीर की मांसपेशियाँ, हड्डियाँ और संतुलन प्रणाली प्रभावित होती हैं। ऐसे में पृथ्वी पर लौटने के बाद शरीर को पुनः सामान्य स्थिति में लाने के लिए विशेष प्रशिक्षण की

आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि विज्ञान केवल तथ्यों का विषय नहीं, बल्कि जिज्ञासा, अनुशासन, नवाचार और समर्पण की निरंतर यात्रा है। यदि युवा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएँ और शोध एवं नवाचार को अपना लक्ष्य बनाएँ तो वे न केवल अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे, बल्कि राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में करिअर बनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि कठिन से कठिन लक्ष्य भी सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास से हासिल किए जा सकते हैं।

संवाद सत्र के दौरान विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने अंतरिक्ष विज्ञान अंतरिक्ष जीवन, प्रशिक्षण प्रक्रिया, वैज्ञानिक अनुसंधान तथा भविष्य के भारतीय अंतरिक्ष अभियानों से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे। ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने सरल एवं प्रेरक शैली में सभी प्रश्नों के उत्तर देते हुए विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। उनके अनुभवों ने उपस्थित युवाओं में विज्ञान एवं अंतरिक्ष अनुसंधान के प्रति नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया।

कार्यक्रम में एम्स ऋषिकेश की कार्यकारी निदेशक प्रो० मीनू सिंह ने ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का स्वागत करते हुए उन्हें देश का वास्तविक नायक बताया। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष में भारत का प्रतिनिधित्व कर उन्होंने पूरे राष्ट्र को गौरवान्वित किया है और आज की युवा पीढ़ी के लिए वे प्रेरणा के सशक्त स्रोत हैं। कार्यक्रम के दौरान उप निदेशक (प्रशासन) लेफ्टिनेंट कर्नल गोपाल मेहरा ने उनके साथ एक विशेष इंटरैक्टिव सत्र का संचालन किया जिसमें नेतृत्व सफलता, चुनौतियों और जीवन मूल्यों पर सार्थक चर्चा हुई। इस अवसर पर डीन एकेडमिक प्रो० सौरभ वार्ष्णेय उप निदेशक (प्रशासन) लेफ्टिनेंट कर्नल गोपाल मेहरा, संस्थान के विभागाध्यक्ष, फैकल्टी सदस्य, प्रशासनिक अधिकारी, मेडिकल एवं नर्सिंग के छात्र–छात्राओं सहित विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रेरणा के नए प्रतीक बने शुभांशु शुक्ला

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का जन्म 10 अक्टूबर 1985 को लखनऊ में हुआ। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने जून 2006 में भारतीय वायु सेना के लड़ाकू विंग में कमीशन प्राप्त किया और आगे चलकर एक कुशल टेस्ट पायलट के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। वर्ष 2019 में उन्हें इसरो के महत्वाकांक्षी गगनयान मिशन के लिए चयनित

अंतरिक्ष यात्रियों में शामिल किया गया।

उन्होंने 25 जून 2025 को एक्सिओम–4 मिशन के पायलट के रूप में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) के लिए उड़ान भरी। वहाँ 18 दिनों तक वैज्ञानिक प्रयोगों और अनुसंधान गतिविधियों में भाग लेने के बाद 15 जुलाई 2025 को सुरक्षित पृथ्वी पर लौटे। नासा, स्पेसएक्स, एक्सिओम स्पेस और इसरो के संयुक्त सहयोग से संपन्न यह मिशन भारत के अंतरिक्ष इतिहास की एक ऐतिहासिक उपलब्धि माना जाता है। वर्ष 1984 में राकेश शर्मा के बाद पृथ्वी की कक्षा में पहुँचने वाले वे दूसरे भारतीय बने। एम्स ऋषिकेश में उनका यह संवाद केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि युवाओं के लिए बड़े सपने देखने विज्ञान को अपनाने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का एक प्रेरणादायी संदेश बन गया।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उप संपादक

महिला सशक्तिकरण

उत्तराखंड की 14 महिलाओं को मिला तीलू रौतेली सम्मान

वीरांगना तीलू रौतेली के जन्म दिवस के अवसर पर 8 अगस्त को कला,संस्कृति,कृषि व स्वरोजगार सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशेष पहचान बनाने वाली 14 महिलाओं को तीलू रौतेली सम्मान प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री सेवक सदन देहरादून में राज्य स्त्री शक्ति तीलू रौतेली पुरस्कार और एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रदेश की 14 महिलाओं को तीलू रौतेली पुरस्कार और 35 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया। सभी विजेताओं को प्रशस्तिपत्र,स्मृति चिह्न के साथ 51-51 हजार रुपए की वर्तमान राशि डीबीटी के माध्यम से उनके खातों में हस्तांतरित की गई। मुख्यमंत्री ने पुरस्कार राशि में वृद्धि की घोषणा करते हुए कहा कि अब तीलू रौतेली पुरस्कार के तहत 51 हजार की जगह 75 हजार रुपए और उत्कृष्ट आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार के रूप में 51 हजार की जगह 61 हजार रुपए प्रदान किये जायेंगे।

तीलू रौतेली सम्मान प्राप्त करने वाली महिलाएं

- **दया दानू (बागेश्वर)** – कुटकी की खेती से नई पहचान बनाई। 400 से अधिक महिलाओं को रोजगार देकर पलायन रोकने में योगदान।
- **वैशाली शर्मा (हरिद्वार)** – मतदान जागरुकता अभियान का नेतृत्व। बाल संरक्षण और सामाजिक सेवा में उल्लेखनीय योगदान।
- **सरिता कोठियाल (टिहरी)** – असहाय वृद्ध और दिव्यांग महिलाओं के कल्याण में उल्लेखनीय योगदान। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आजीविका के अवसर उपलब्ध कराए।
- **पुष्पा देवी (यूएस नगर)** – दक्षिण एशियाई पैरा गेम्स में स्वर्ण पदक जीता। राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पदक जीतकर प्रदेश का गौरव बढ़ाया।
- **लतिका (नैनीताल)** – विश्व रैंकिंग के शीर्ष 20 में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक पदक प्राप्त किये।
- **पुष्पा फर्त्याल (अल्मोड़ा)** – कुमांउनी लोक संस्कृति को राष्ट्रीय मंचों तक पहुंचाया,विषम परिस्थितियों में भी लोक कला संरक्षण का कार्य जारी,संस्कृति मंत्रालय व विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित।
- **नन्दा सती (चमोली)** – राष्ट्रपति स्वर्ण पदक से सम्मानित। सीमांत क्षेत्रों की बालिकाओं को संगीत का निशुल्क प्रशिक्षण दिया।
- **प्रियंका थपलियाल (पौड़ी)** – स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को रोजगार। स्वास्थ्य

जागरूकता अभियान में सक्रिय भूमिका।

- **स्वतंत्री बधानी (उत्तरकाशी)** – कृषि,उद्यान, पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण में उल्लेखनीय कार्य। अनेक राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त।
- **रितिका बगौली** – उत्तराखंड का पहला 'अल्गल ट्री' विकसित किया। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध कार्य।
- **नीतू रानी (देहरादून)** – 18 वर्षों से दिव्यांगजनों, महिलाओं और निर्धन बच्चों की सेवा। अनेक राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त।
- **दुर्गा देवी (रुद्रप्रयाग)** – 120 महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन। महिला जागरूकता और सामाजिक अभियानों में सक्रिय भूमिका।
- **कलावती देवी (पिथौरागढ)** – ग्रामीण महिलाओं को जैविक खेती,डेयरी से आत्मनिर्भर बनाया। वर्मी कम्पोस्ट और जैविक उत्पादों को बढ़ावा दिया।
- **निशु पुनेठा (पिथौरागढ)** – लोक संस्कृति एवं लोक कला के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय योगदान, ऐपण कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाई।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सम्मान

अल्मोड़ा से सुनीता टम्टा, हेमा मेर, बबीता अधिकारी, सीमा देवी, बागेश्वर से आनंदी देवी, चमोली से शकुन्तला बिष्ट, गीता चन्द्रा, रत्ना बिष्ट, चम्पावत से तुलसी देवी, देहरादून से रश्मि पंत, पूनम साही, लक्ष्मी पंत, हरिद्वार से अनिता बर्मन, स्नेहलता, उमा रानी, फरहाना परवीन, नैनीताल से लीला रुवाली, हंसा देवी, निर्मला टम्टा, पौड़ी से संगीता देवी, माधुरी देवी, दर्शनी देवी, रेनू देवी, तुलसी, पिथौरागढ़ से सुनीता बसैड़ा, गंगा कार्की, रुद्रप्रयाग से सरस्वती देवी, टिहरी गढ़वाल से सुषमा देवी, रोशनी देवी, पूनम देवी, यूएस नगर से गुरप्रीत कौर, रक्षा, शकुन्तला पाल, उत्तरकाशी से रेखा, रेखा जोशी को उत्कृष्ट आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सम्मान दिया गया।

प्रस्तुति - प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़

आक्रमक खरपतवार

गाजर घास

उत्तराखंड की जैव विविधता के लिए एक मूक खतरा

उत्तराखंड अपनी अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध जैव विविधता और पवित्र वातावरण के लिए विश्वविख्यात है। पिछले कुछ दशकों में इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी एक गंभीर संकट का सामना कर रही है। यह संकट किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा से नहीं, बल्कि आक्रमणकारी विदेशी पौधों से है जिनमें प्रमुख है एक आक्रामक खरपतवार जिसे बोलचाल की भाषा में गाजर घास, कांग्रेस घास, चटक चांदनी या गंधी बूटी कहा जाता है और उसका वैज्ञानिक नाम है पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस *(Parthenium hysterophorus)*। मूल रूप से अमेरिका का यह पौधा आज उत्तराखंड के मैदानी इलाकों से लेकर मध्य–हिमालयी पहाड़ियों तक पैर पसार चुका है। यह घास न केवल हमारी कृषि भूमि को बंजर बना रही है, बल्कि स्थानीय वनस्पतियों, मानव स्वास्थ्य और वन्यजीवों के लिए भी एक मूक महामारी का रूप ले रहा है।

गाजर घास भारत का स्थानीय पौधा नहीं है। माना जाता है कि 1950 के दशक में जब भारत में अनाज की भारी कमी थी, तब अमेरिका से 'पीएल–480' (PL–480) योजना के तहत गेहूं का आयात किया गया था। इसी आयातित गेहूं के साथ गाजर घास के बीज भी अनजाने में भारत पहुंच गए। ऐसा माना जा रहा है कि इस घास से फसलों को 35–40 प्रतिशत तक हानि हो रही है और यह देश के लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। उत्तराखंड में इसका आगमन निचले मैदानी जिलों जैसे उधम सिंह नगर, हरिद्वार और देहरादून के रास्ते हुआ। धीरे–धीरे वाहनों के टायरों, नदियों के पानी, हवा और पशुओं के माध्यम से इसके बारीक बीज पहाड़ी रास्तों से होते हुए पर्वतीय क्षेत्रों तक पहुंच गए। आज स्थिति यह है कि यह सड़कों के किनारे, चारागाहों, जंगलों के मुहानों और कृषि खेतों में पूरी तरह फैल चुकी है। गाजर घास के तेज फैलाव के पीछे इसकी कुछ विशेष जैविक विशेषताएं हैं। इसका एक ही मध्यम आकार का पौधा एक सीजन में 10,000 से 25,000 तक सूक्ष्म बीज पैदा कर सकता है। ये बीज इतने हल्के होते हैं कि हवा के झोंके से मीलों दूर चले जाते हैं। इसके बीजों में विपरीत परिस्थितियों को झेलने की अद्‌भुत क्षमता होती है। ये मिट्टी में कई वर्षों तक सुप्त अवस्था में पड़े रह सकते हैं और अनुकूल मौसम मिलते ही उग आते हैं। गाजर घास की जड़ों और पत्तियों से 'पार्थेनिन' नाम का एक जहरीला रसायन निकलता है। यह रसायन आसपास की मिट्टी में मिल जाता है और दूसरी फसलों या स्थानीय घासों के बीजों को अंकुरित होने ही नहीं देता। उत्तराखंड के पहाड़ों में पारंपरिक रूप से अनेक प्रकार की वनस्पतियां और औषधीय पौधे पाए जाते हैं। गाजर घास अपने आक्रामक प्रकृति के कारण इन स्थानीय प्रजातियों को दबा देती है। जहां एक बार गाजर घास उग जाती है, वहां कुछ ही समय में केवल इसी का साम्राज्य हो जाता है। चरागाहों के नष्ट होने से पहाड़ों में हरी घास की कमी हो गई है, जिससे पूरा पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ रहा है।

इसके पौधे पर मौजूद बारीक रोएं और इसके परागकण हवा में तैरते रहते हैं। इसके लगातार संपर्क में आने से मनुष्य में अनेक बीमारियां होती हैं। इसके छूने मात्र से त्वचा पर लाल चकत्ते, तेज खुजली और एक्जिमा

जैसी समस्याएं हो जाती हैं। इसे 'पार्थेनियम डर्मेटाइटिस' भी कहते हैं। हवा में फैले इसके परागकण जब सांस के जरिए शरीर में जाते हैं, तो दमा, साइनसाइटिस और लगातार सूखी खांसी की बीमारी पैदा करते हैं। इसके प्रभाव से आंखों का लाल होना और लगातार पानी आना एक आम समस्या है। उत्तराखंड की एक बड़ी आबादी कृषि और बागवानी पर निर्भर है। गाजर घास फसलों के साथ पोषक तत्वों, धूप और पानी के लिए मुकाबला करती है, जिससे फसलों की पैदावार में काफी गिरावट आ सकती है। इसके अलावा, सेब और अन्य फलों के बगीचों में भी यह खरपतवार पोषक तत्वों को सोख लेता है, जिससे फल छोटे और कम गुणवत्ता वाले होते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में पशुपालन आजीविका का मुख्य साधन है। गाय, भैंस और बकरियां आमतौर पर गाजर घास को नहीं खातीं क्योंकि यह स्वाद में कड़वी और जहरीली होती है। लेकिन जब चरागाहों में कुछ और नहीं बचता, तो वे इसे खाने पर मजबूर हो जाते हैं। इसके सेवन से पशुओं के मुंह और पेट में छाले हो जाते हैंऔर उनका दूध पीने योग्य नहीं रहता। अधिक मात्रा में खाने पर पशुओं की मृत्यु तक हो सकती है। जिम कॉर्बेट और राजाजी राष्ट्रीय उद्यान जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के बफर जोन में इसके फैलने से शाकाहारी वन्यजीवों के भोजन का संकट खड़ा हो सकता है।

इस समस्या से निपटने के लिए एकीकृत खरपतवार प्रबंधन अपनाना नितांत आवश्यक है। इसके नियंत्रण में भौतिक या मैन्युअल नियंत्रण सबसे पुराना और सीधा तरीका है, लेकिन इसे अपनाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। मानसून के समय जब मिट्टी गीली हो और पौधे में फूल न आए हों, तब इसे जड़ से उखाड़ना बेहद प्रभावी है। इसे उखाड़ते समय हाथों में रबर के दस्ताने, पूरी आस्तीन के कपड़े और चेहरे पर मास्क जरूर पहनना चाहिए। सामूहिक श्रमदान के जरिए इसे बड़े पैमाने पर साफ किया जा सकता है। जैविक नियंत्रण पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना गाजर घास को खत्म करने का सबसे आधुनिक, सुरक्षित और प्रभावी तरीका है। इसके लिए मैक्सिकन बीटल *(Zygogramma bicolorata)* नामक एक छोटे कीड़े का उपयोग किया जाता है। इस घास के जैविक नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम 1984 में इस कीट का प्रयोग प्रारंभ हुआ। यह कीट केवल गाजर घास की पत्तियों और फूलों को खाता है।यह हमारी मुख्य फसलों या अन्य स्थानीय पौधों को कोई नुकसान नहीं

पहुंचाता। खेती योग्य भूमि से दूर या सड़कों के किनारे जहां इसे आसानी से हटाना संभव न हो, वहां रसायनों का उपयोग किया जा सकता है।उखाड़ी गई गाजर घास को फेंकने या जलाने के बजाय उसे उपयोगी बनाया जा सकता है। फूल आने से पहले उखाड़ी गई घास को जमीन में गहरे गड्ढे में गोबर और मिट्टी के साथ दबाकर कंपोस्ट तैयार की जा सकती है। उत्तराखंड में गाजर घास का प्रसार एक गंभीर पर्यावरणीय और जन स्वास्थ्य संकट है। वन विभाग और कृषि वैज्ञानिकों के प्रयासों के साथ–साथ इसमें जन– भागीदारी का होना बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यालयों, ग्राम पंचायतों और महिला मंगल दलों के माध्यम से लोगों को इसके खतरों के प्रति जागरूकता फैलाना जरूरी हो गया है । जब तक देवभूमि का प्रत्येक नागरिक इस अनचाहे अतिथि की पहचान कर इसे अपने आसपास से हटाने का संकल्प नहीं लेगा, तब तक इस समस्या से मुक्ति पाना संभव नहीं है। इसके प्रसार के विरुद्ध ठोस कदम उठाकर ही हम उत्तराखंड की शुद्ध हवा, मिट्टी और समृद्ध जैव विविधता को सुरक्षित रख सकते हैं।

प्रस्तुति : डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)

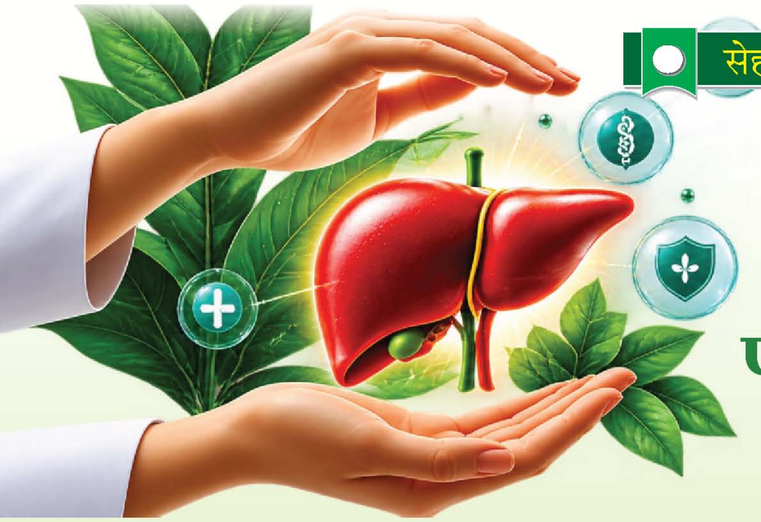

मैं हूँ आपका यकृत (लीवर)

एक खामोश प्रहरी की भावुक पुकार

विश्व हेपेटाइटिस दिवस विशेष

प्रिय मानव,

आज मुझे आपसे कुछ कहना है।

नहीं, मैं आपका हृदय नहीं हूँ जो व्यायाम न करने की शिकायत करे, और न ही आपका पेट, जो मसालेदार भोजन के बाद विरोध जताए।

मैं आपका यकृत (लीवर) हूँ आपकी पसलियों के नीचे चुपचाप अपना कर्तव्य निभाने वाला वह अंग, जो आपके जन्म से पहले से ही आपके साथ है। मैं प्रतिदिन **500 से अधिक महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ,** फिर भी कभी किसी प्रशंसा, पुरस्कार या अवकाश की अपेक्षा नहीं रखता।

जब आप गहरी नींद में होते हैं, तब मैं क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत करता हूँ।

जब आप भोजन का आनंद लेते हैं, तब मैं उसे ऊर्जा में परिवर्तित करता हूँ।

जब आप दवा लेते हैं, चाय–कॉफी पीते हैं या जीवन की खुशियाँ मनाते हैं, तब मैं आपके शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में लगा रहता हूँ।

मैं आपके शरीर की **रासायनिक प्रयोगशाला, ऊर्जा बैंक, औषधि निर्माण केंद्र, रीसाइक्लिंग संयंत्र और सुरक्षा प्रहरी** : सब कुछ हूँ।

फिर भी, शायद ही कभी आपको मेरी याद आती हो।

लेकिन आज मैं चिंतित हूँ...

इन दिनों एक अनचाहा मेहमान मेरे पास बार–बार आने लगा है **हेपेटाइटिस।**

यह कभी दूषित भोजन और पानी के माध्यम से आता है, कभी संक्रमित रक्त से, कभी असुरक्षित इंजेक्शन या चिकित्सा उपकरणों से, तो कभी माँ से शिशु तक पहुँच जाता है।

सबसे खतरनाक बात यह है कि अधिकांश लोगों को इसकी मौजूदगी का पता ही नहीं चलता।

जब आप सामान्य जीवन जी रहे होते हैं, तब यह बीमारी मुझे भीतर ही भीतर क्षति पहुँचाती रहती है।

यह शोर नहीं मचाती...

यह धीरे–धीरे मुझे कमजोर करती है।

मैं बहुत सहनशील हूँ...

प्रकृति ने मुझे अद्‌भुत क्षमता दी है।

यदि मैं घायल हो जाऊँ, तो स्वयं को पुनः स्वस्थ करने का प्रयास करता हूँ।

यदि मुझ पर अधिक कार्यभार पड़े, तब भी मैं बिना शिकायत काम करता रहता हूँ।

मैं उन कुछ अंगों में से हूँ जो क्षति के बाद पुनर्जीवित (Regenerate) होने की क्षमता रखते हैं।

लेकिन...

हर शक्ति की एक सीमा होती है।

यदि वर्षों तक क्षति होती रहे, तो स्वस्थ ऊतकों की जगह धीरे–धीरे कठोर निशान (Scar Tissue) बनने लगते हैं।

एक समय ऐसा आता है जब मैं अपना कार्य ठीक से नहीं कर पाता।

तब चिकित्सक सिरोसिस, लीवर फेल्योर या लीवर कैंसर जैसे गंभीर शब्दों का उल्लेख करते हैं।

सच कहूँ...

मैं कभी नहीं चाहता कि आपको इन परिस्थितियों का

सामना करना पड़े।

क्या आप मेरे लिए कुछ छोटे–से वादे करेंगे?

- हेपेटाइटिस–बी का टीका अवश्य लगवाइए।
- पीलिया, अत्यधिक थकान या असामान्य लक्षणों को कभी नजरअंदाज मत कीजिए।
- केवल सुरक्षित इंजेक्शन और जाँचे हुए रक्त का ही उपयोग सुनिश्चित कीजिए।
- स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल का सेवन कीजिए।
- यदि हेपेटाइटिस का निदान हो जाए, तो उपचार बीच में न छोड़ें।
- यदि कभी संक्रमण का जोखिम रहा हो, तो बिना डर के जाँच कराइए।

याद रखिए...

जाँच कराना कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी और जिम्मेदारी का प्रमाण है।

उम्मीद अभी भी जिंदा है

चिकित्सा विज्ञान ने आज हमारे लिए नई संभावनाएँ खोल दी हैं।

हेपेटाइटिस A और B से टीकाकरण द्वारा काफी हद तक बचाव संभव है।

हेपेटाइटिस C का आधुनिक दवाओं से सफल उपचार और पूर्ण इलाज संभव हो चुका है।

समय पर पहचान और उपचार से वर्षों तक होने वाली मौन क्षति को रोका जा सकता है।

आज पहली बार मानवता के पास वायरल हेपेटाइटिस को समाप्त करने का वास्तविक अवसर है।

लेकिन यह तभी संभव होगा, जब लोग उस अंग की भी परवाह करेंगे जो जीवनभर बिना शिकायत उनके लिए कार्य करता रहता है।

अंत में...

यदि कोई आपसे पूछे कि शरीर का सबसे मेहनती अंग कौन–सा है ?

तो एक बार मुझे अवश्य याद कीजिए।

इसलिए नहीं कि मुझे सम्मान चाहिए...

बल्कि इसलिए कि मेरी याद आपको और आपके अपनों को स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा दे सके।

विश्व हेपेटाइटिस दिवस पर एक संकल्प लें।

- टीकाकरण कराएँ।
- आवश्यकता होने पर जाँच अवश्य कराएँ।
- सही जानकारी फैलाएँ।
- लोगों को समझाएँ कि **'चुप्पी का अर्थ स्वास्थ्य नहीं होता।'**

मैं अपना कर्तव्य निभाता रहूँगा।

बस उम्मीद है कि आप भी अपनी जिम्मेदारी निभाएँगे।

सदैव आपके स्वास्थ्य की रक्षा में समर्पित,

आपका यकृत (लीवर)

वह अंग जिसने कभी एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली।

प्रस्तुति : डॉ गुंजन, एमपीएच स्कॉलर, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, एम्स ऋषिकेश

समारोह

साईं सृजन पटल के द्वितीय स्थापना दिवस पर

पर्यावरण संरक्षण व रचनात्मकता का प्रयास

साईं सृजन पटल की स्थापना के दो वर्ष पूर्ण होने पर 'साईं कुटीर' आर.के.पुरम देहरादून में यह दिवस अत्यंत उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। संस्थापक प्रो.के.एल.तलवाड़ ने बताया कि 'साईं सृजन पटल' की स्थापना 9 अगस्त 2024 को 'लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध' ध्येय वाक्य के साथ की गई थी। दो वर्षों की इस यात्रा में पटल ने साहित्य, शिक्षा,पर्यावरण और सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यों को करने का प्रयास किया है। इस क्रम में मासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन, मेधावी छात्रवृत्ति, लेखक श्री सम्मान, एनएसएस सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी पुरस्कार, प्रतिभाओं का सम्मान और समाचार लेखन व एआई के प्रयोग प्रशिक्षण आदि को रेखांकित किया जा सकता है। उप संपादक अंकित तिवारी ने बताया कि 'साईं सृजन पटल' पत्रिका आज उत्तराखंड की

एक प्रामाणिक और प्रभावशाली पत्रिका के रूप में पाठकों के बीच अपनी विशेष पहचान बना चुकी है। इस मौके पर पटल द्वारा आर.के.पुरम आवासीय कॉलोनी में स्कूली बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए उन्हें 'कलर व स्टेशनरी किट' भेंट किये गये। पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से पटल के सदस्यों, व्यापारियों और स्टाफ को 'जूट बैग' वितरित किये गये। इस मौके सलाहकार मंडल के सदस्य दून के सीनियर फिजिशियन डॉ.एस.डी. जोशी,सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.आर. के. उभान, गढ़वाली फिल्म अभिनेता व लेखक डॉ.अनूप वीरेन्द्र कठैत, साहित्यकार डॉ.चन्द्र भूषण बिजल्वाण, उप संपादक अंकित तिवारी,मॉडल व अभिनेत्री वैष्णवी लोहनी को सराहनीय सहयोग के लिए स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। डॉ. बिजल्वाण 'लेखक श्री सम्मान' से भी नवाजे गये। स्थापना दिवस समारोह में लेखिका श्रीमती नीलम तलवाड़, जय सिंह रावत, नित्या लोहनी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

प्रस्तुतिः अक्षत तलवाड़
सीईओ इंसाइडी मीडिया

पशुपालकों के सम्मान का प्रतीक

जौनसार-बावर का नुड़ाई मेला

जौनसार–बावर अपनी समृद्ध लोक संस्कृति, पारंपरिक जीवनशैली और कृषि–पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था के लिए सदियों से जाना जाता रहा है। यहां के लोगों का जीवन खेतों, जंगलों और पशुधन के इर्द–गिर्द घूमता था। खेती और पशुपालन केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान भी थे। समय के साथ आधुनिकता, पलायन और बदलती जीवनशैली ने इस परंपरा को गहरा आघात पहुंचाया है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव भेड़–बकरी पालन पर पड़ा है, जो कभी जौनसार–बावर की अर्थव्यवस्था की मजबूत रीढ़ माना जाता था। इसी परंपरा और भेड़ पालकों के सम्मान में क्षेत्र का प्रसिद्ध नुड़ाई मेला आयोजित किया जाता है। यह मेला केवल धार्मिक या सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि उन पशुपालकों के सम्मान का प्रतीक है जो वर्षभर ऊंचे हिमालयी बुग्यालों में कठिन परिस्थितियों के बीच अपने पशुधन की देखभाल करते थे। मेले में लोकनृत्य, ढोल–दमाऊ की थाप, पारंपरिक वेशभूषा और सामुदायिक मेल–मिलाप की अनूठी झलक देखने को मिलती है।

बदलते दौर में घटती पशुपालन की परंपरा

कुछ दशक पहले तक जौनसार–बावर के अधिकांश परिवारों के पास बड़ी संख्या में भेड़–बकरियां होती थीं। गर्मियों में पशुपालक अपने झुंडों के साथ ऊंचे बुग्यालों की ओर निकल जाते थे और सर्दियों में वापस गांव लौटते थे। भेड़ों से प्राप्त ऊन से स्थानीय स्तर पर गर्म शॉल, पंखी, लोई और कंबल तैयार किए जाते थे, जिनकी अच्छी मांग रहती थी। लेकिन आज यह परंपरा तेजी से सिमटती जा रही है। कई गांवों में भेड़–बकरी पालन लगभग समाप्त होने की कगार पर है। नई पीढ़ी शिक्षा और रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन कर रही है। कठिन परिश्रम वाले इस व्यवसाय की ओर युवाओं का रुझान लगातार कम हो रहा है। बाजार ने बदली तस्वीर भेड़ पालन में गिरावट का एक बड़ा कारण बाजार में सस्ते और आधुनिक ऊनी कपड़ों की उपलब्धता भी है। पहले लोग स्थानीय ऊन से बने कपड़ों पर निर्भर रहते थे, लेकिन अब कम कीमत पर जैकेट, स्वेटर, कंबल और अन्य गर्म कपड़े आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इससे स्थानीय ऊन की मांग घट गई है और पशुपालकों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता। इसके अलावा जंगलों में चराई संबंधी नियम, जंगली जानवरों का बढ़ता खतरा, पशु चिकित्सा सुविधाओं की कमी और बढ़ती लागत ने भी इस पारंपरिक व्यवसाय को कमजोर किया है।

संस्कृति बची है, पर आधार कमजोर

आज भी नुड़ाई मेला पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। हजारों लोग इसमें शामिल होकर अपनी लोक संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास करते हैं। लेकिन विडंबना यह है कि जिस पशुपालन पर इस मेले की परंपरा आधारित है, वही धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले समय में नुड़ाई मेला केवल सांस्कृतिक उत्सव बनकर रह जाएगा और इसके मूल उद्देश्य से नई पीढ़ी अनजान हो जाएगी।

संरक्षण की जरूरत

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि सरकार और स्थानीय स्तर पर भेड़–बकरी पालन को प्रोत्साहन दिया जाए, ऊन के प्रसंस्करण और विपणन की बेहतर व्यवस्था हो, आधुनिक पशुपालन प्रशिक्षण, बीमा और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाए, तो यह परंपरा फिर से मजबूत हो सकती है। साथ ही स्थानीय ऊनी उत्पादों को 'जौनसारी ब्रांड' के रूप में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाया जाए तो पशुपालकों की आय में भी वृद्धि हो सकती है।

जौनसार–बावर की पहचान केवल उसकी प्राकृतिक सुंदरता या लोक संस्कृति नहीं, बल्कि उसकी कृषि और पशुपालन पर आधारित जीवनशैली भी रही है। नुड़ाई मेला हमें इस विरासत की याद दिलाता है। आवश्यकता इस बात की है कि केवल मेले की परंपरा ही नहीं, बल्कि उस पशुपालन संस्कृति को भी संरक्षित किया जाए जिसने सदियों तक इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन को मजबूती प्रदान की। तभी नुड़ाई मेले का वास्तविक महत्व आने वाली पीढ़ियों तक जीवित रह सकेगा।

प्रस्तुति :
राहुल चौहान, वरिष्ठ पत्रकार, चकराता, देहरादून

प्रो. डी.आर. पुरोहित को मिला इंद्रमणि बडोनी स्मृति सम्मान

उत्तराखंड राज्य आंदोलन के सूत्रधार, 'पर्वतीय गांधी' के रूप में विख्यात जननेता, संस्कृतिकर्मी और कला–प्रेमी स्वर्गीय इंद्रमणि बडोनी की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा उत्तराखंड के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन में उनके योगदान को जनमानस तक पहुँचाने के उद्देश्य से इंद्रमणि बडोनी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला चतुर्थ इंद्रमणि बडोनी स्मृति सम्मान लोक संस्कृति के संरक्षण एवं पुनर्स्थापना के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रख्यात संस्कृति मर्मज्ञ प्रो० डी. आर. पुरोहित को प्रदान किया गया।

18 अगस्त को देहरादून स्थित दून लाइब्रेरी एवं रिसर्च सेंटर के सभागार में इस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ इंद्रमणि बडोनी के व्यक्तित्व और उनके सांस्कृतिक अवदान के स्मरण से हुई। लोककला एवं संस्कृति निष्पादन केंद्र, गढ़वाल विश्वविद्यालय के निदेशक गणेश खुगशाल 'गणी' ने कहा कि बडोनी जी का विराट व्यक्तित्व आज भी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। डॉ. डी. आर. पुरोहित का इस सम्मान के लिए चयन पूरी तरह सार्थक है, क्योंकि इंद्रमणि बडोनी जननेता होने के साथ–साथ उत्तराखंड की लोक संस्कृति को पहचान दिलाने वाले कला–साधक भी थे और प्रो० पुरोहित ने भी इसी सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। समारोह में लोक गायक एवं संस्कृतिकर्मी डॉ. शैलेन्द्र मैठाणी ने 'सुंदर माँ नंदा' का जागर प्रस्तुत किया। कवि विजय प्रकाश रतूड़ी ने अपनी काव्यांजलि के माध्यम से स्वर्गीय इंद्रमणि बडोनी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। वरिष्ठ पत्रकार दिनेश शास्त्री ने इंद्रमणि बडोनी से जुड़े अपने संस्मरण साझा किए। उन्होंने प्रो० पुरोहित के सहज, सरल और आत्मीय व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए उनके सांस्कृतिक योगदान को रेखांकित किया। इंद्रमणि बडोनी के सांस्कृतिक दल के सदस्य रहे सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य बालकृष्ण नौटियाल ने बडोनी जी के साथ बिताए दिनों को याद किया। उन्होंने बडोनी जी के निर्देशन में तैयार की गई माधो सिंह भंडारी के जीवन पर आधारित नृत्य–नाटिका से जुड़े अनेक प्रसंग भी सुनाए। प्रख्यात साहित्यकार बीना बेंजवाल ने डॉ. डी. आर. पुरोहित के सम्मान में प्रशस्ति–पत्र का वाचन किया। शिक्षाविद् एवं सेवानिवृत्त शिक्षा अपर निदेशक शिव प्रसाद सेमवाल ने उनका माल्यार्पण किया, श्रीमती निर्मला चौहान ने पुष्पगुच्छ भेंट किया। मुख्य अतिथि गढरत्न नरेंद्र सिंह नेगी ने अंगवस्त्र तथा कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. सुरेखा डंगवाल ने स्मृति चिह्न प्रदान किया। इंद्रमणि बडोनी चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख विनोद बडोनी ने मुख्य अतिथि एवं कार्यक्रम अध्यक्ष की उपस्थिति में सम्मान स्वरूप रूपये 51,000 की राशि प्रो. पुरोहित को भेंट की। सम्मान ग्रहण करने के बाद प्रो० डी. आर. पुरोहित ने अपनी विशिष्ट सहज शैली में कहा कि यह सम्मान किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि कला और लोक संस्कृति का सम्मान है। उन्होंने इंद्रमणि बडोनी चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस सम्मान ने उनकी सांस्कृतिक यात्रा की जिम्मेदारी को और बढ़ा दिया है। मुख्य अतिथि गढ़रत्न नरेंद्र सिंह नेगी ने प्रो० पुरोहित को सम्मान के लिए बधाई देते हुए माँ नंदा के गीतों और लोक संस्कृति के क्षेत्र में उनके साथ किए गए कार्यों को याद किया।

अध्यक्षीय संबोधन में दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने कहा कि प्रो० पुरोहित का जीवन और कार्य हमें यह समझाता है कि आधुनिकता की ओर बढ़ते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखना क्यों जरूरी है।

कार्यक्रम के सांस्कृतिक पक्ष को युवा कलाकार अलभ्य बडोनी एवं त्रिष्ठव बडोनी ने रामलीला की राग–रागनियों की प्रस्तुति से जीवंत कर दिया। प्रो० राकेश जोशी ने कहा कि डॉ. पुरोहित 'सादा जीवन–उच्च विचार' की परंपरा को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले व्यक्ति हैं। समारोह में उत्तराखंड के साहित्य, पत्रकारिता, कला और संस्कृति जगत से जुड़े अनेक बुद्धिजीवी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। समारोह का संचालन शिक्षक गिरीश बडोनी ने किया।

प्रस्तुति - प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़

स्मृतिशेष

लोक हास्य दिवस : 04 अगस्त पर विशेष

हास्य सम्राट-घनानन्द 'घन्नाभाई'

उत्तराखण्ड सिनेमा व कलामंच से हास्य को आम जनमानस तक पहुंचाने वाले सुविख्यात हास्य सम्राट स्व. घनानन्द गगोड़िया 'घन्ना भाई' की 73वीं जयंती द्वितीय 'लोक हास्य दिवस' संस्कृत प्रेक्षागृह देहरादून में 4 अगस्त को, विभिन्न कला व संस्कृति प्रेमियों की उपस्थिति में मनाई गई। प्रथम कार्यक्रम की शुरुआत पिछले वर्ष में इसी दिन से हुई थी। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत व गढ़रत्न श्री नरेन्द्र सिंह की उपस्थिति में कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। तत्पश्चात मांगलिक व सांस्कृतिक प्रस्तुति द्वारा कार्यक्रम ने अलग आभा दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत की। इसके साथ ही घन्नाभाई के जीवन पर बना एक लघु वीडियो भी प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम की विस्तृत की जानकारी 'घन्नाभाई फाउन्डेशन' के प्रमुख धनान्द जी के सुपुत्र प्रशान्त ने दी। प्रशान्त ने अपने तमाम संस्मरण व जीवन में पिता की अहम भूमिका पर दर्शकों भावुक कर दिया। अपने पिता के जन्म दिवस को 'लोक हास्य दिवस' के रूप में मनाना स्वयं में एक प्रशंसनीय कदम व एक सप्रेम श्रद्धांजलि है। जीवन में हास्य की महत्ता पर विभिन्न वक्ताओं ने अपनी बात रखी। घनानन्द जी का जन्म 4 अगस्त 1953 को गगोड़ गांव, पौड़ी गढ़वाल में हुआ था।

> "धन्नाभाई सिर्फ एक नाम नहीं थे बल्कि लोक विरासत, एक सांस्कृतिक धरोहर और हमारी हंसी की अनमोल धनराशि थे।

उनकी शिक्षा कैंट बोर्ड लैंसडौन में हुई थी। एक बेहतरीन कॉमिक परफॉरमर होने पर उन्हें 'उत्तराखण्ड का 'कॉमेडी किंग' कहा जाता था। उन्होंने 70 के दशक में रामलीला से अपने अभिनय की शुरूआत की। उसके बाद आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा गढ़वाली फिल्मों से अपने यूनिक कॉमिक टाइमिंग से दर्शकों का कई दशकों तक मनोरंजन किया। घनानन्द नाम सुनते ही लोगों के मन में एक मुस्कान तथा आनन्द की अनुभूति होना एक आम बात है। उनके अभिनय के तमाम किरदार चाहे नाटक हो या फिल्में आज भी लोगों को कंठस्थ याद हैं। उनकी प्रमुख फिल्में घरजवें, चक्रचाल, बेटी–ब्वारी, जीतू बगड़वाल, सतमंगल्या, घन्ना गिरगिट, घन्नाभाई एम.बी.बी.एस. आदि ने उत्तराखण्ड सिनेमा को हास्य के रूप में एक मजबूत आधार दिया। उनके ऑडियो कैसेट ने ठहाकों का अलग रिकॉर्ड बनाया। वे सामाजिक जीवन से आगे राजनैतिक जीवन में भी सक्रिय रहे। उन्होंने 2012 में पौड़ी से विधानसभा चुनाव भी लड़ा हलांकि वे विजयी नहीं हो पाये परन्तु बाद में उन्हें राज्य सरकार में राज्यमंत्री का दर्जा दिया गया। वे 'उत्तराखण्ड संस्कृति साहित्य एवं कला

परिषद' के उपाध्यक्ष भी रहे। हृदय सम्बन्धी बीमारी के बाद 11 फरवरी 2025 को 72 वर्ष की उम्र में उन्होने हंसते हुए ही इस दुनिया को अलविदा कहा। गढ़रत्न नरेन्द्र सिंह नेगी जी के साथ उनकी जोड़ी को दशकों तक याद किया जायेगा। उनकी स्टैंड-अप कॉमेडी के लिए श्रेय नेगी जी को ही जाता है जिन्होंने उन्हें मंच प्रदान कर उनके चुटकुलों को असंख्य सुनने वालों तक पहुंचाया। उनके चाहने वाले राज्य ही नहीं अपितु देश-विदेश में भी घन्ना भाई फैन कैटेगरी में शामिल हैं। उनके साथ बिताये पलों को जब कोई अभिनेता या आमजन याद करता है तो जीवन की कठिनाइयों को हास्य के माध्यम से सुलझाना व हर चेहरे पर मुस्कान लाना ही घन्ना भाई के जीवन का असल उदेश्य था।

'घन्नाभाई फाउन्डेशन' द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कर्मठ मनीषियों को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में अधिवक्ता ललित जोशी, स्वास्थ्य सेवा के लिए पद्मश्री डॉ. आर.के.जैन, लोक हास्य के क्षेत्र में किशन बगोट तथा आचार्य सुरेन्द्र प्रसाद सुन्दरियाल को घन्ना भाई सम्मान दिया गया। कार्यक्रम में उभरते कलाकार संदीप छिलबट ने अपनी धमाकेदार व व्यंगात्मक प्रस्तुति से ठहाकों का माहौल बना दिया। वहीं दूसरी ओर सुप्रसिद्व नाटककार स्व.ललितमोहन थपलियाल के नाटक 'खाड़ू लापता' ने दर्शकों को उनके पेट पकड़ने पर मजबूर कर दिया। नाटक में गोकुल पंवार, अरविंद नेगी, दीपक व्यास, व दीपक ने मुख्य भूमिका निभायी। कार्यक्रम में सिनेमाजगत, रंगमंच व संस्कृत प्रेमियों की उपस्थिति इस बात की गवाही दे रही थी कि घन्ना भाई जहां कहीं भी हों, उनके चाहने वाले आज भी उनके हास्य को अपने जीवन में शामिल कर उनकी मौजूदगी का प्रमाण दे रहे थे। आज के इस तनाव भरे जीवन में हास्य किसी संजीवनी से कम नहीं है। उनकी सादगी और कॉमिक टाइमिंग का आज भी कोई विकल्प नहीं है। घन्ना भाई ने आम जीवन के हास्य को रामलीला मंच से शुरू कर फिर बड़े मंच से लेकर सिल्वर स्क्रीन तक पहुंचाया। वे कहते थे हंसना एक टॉनिक है और ये महंगी भी नहीं है बल्कि आपके जेब में है। उनका हंसता चेहरा व सादगी की प्रतिमा उत्तराखण्ड कला एवं संस्कृति प्रेमियों के मन मस्तिष्क में हमेशा अमिट रहेगी। किसी बड़े कलाकार के अभाव की शून्यता को भर पाना वैसे तो असम्भव है परन्तु उनके बनाये रास्तों पर चलकर कई हास्य कलाकार अपना हुनर संवार रहे हैं। यह एक ऐसी प्रेरणा है जिसने इस महान आत्मा को सदा के लिए आमजन के हृदय में अमर कर दिया है।

प्रस्तुति डॉ. अनूप वीरेन्द्र कठैत
(साहित्यकार/ फिल्म समीक्षक)

गौरव गाथा

जुग-जुग तक रालू याद 'सुमाड़ी कू पंथ्या दादा'

लोकगायक नरेंद्र सिंह नेगी के एक गीत की यह पंक्तियां **'जुग–जुग तक रालू याद सुमाड़ी कू पंथ्या दादा'** यह वही सुमाड़ी गांव के पंथ्या दादा थे, जिन्होंने तत्कालीन राजशाही के निरंकुशता और जनविरोधी आदेशों के विरोध में अपने प्राणों की आहूति दे डाली थी। उत्तराखंड की महान ऐतिहासिक गाथाओं में उनका नाम उसी गौरव के साथ शुमार ही नहीं, बल्कि उन्हें याद भी किया जाता है।

पंथ्या दादा का जन्म सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पौड़ी गढ़वाल की कटूलस्यूं पट्टी के प्रसिद्ध गांव सुमाड़ी में हुआ था। माता पिता का देहांत उनके बचपन में ही होने से उनका लालन– पालन बहन की ससुराल फरासू में हुआ। उस समय उत्तराखंड का गढ़वाल क्षेत्र 52 छोटे राज्यों (गढ़ों) में बंटा हुआ था। इन्हीं गढ़पतियों में से एक शक्तिशाली राजा मेदनी शाह का वजीर सुमाड़ी का सुखराम काला था।

लोक मान्यताओं के अनुसार राजा अजयपाल ने जब अपनी राजधानी चांदपुर गढ़ी से देवलगढ़ में स्थानांतरित की थी, तो उन्होंने सुमाड़ी का क्षेत्र काला जाति के ब्राह्मणों, जो कि मां गौरा के उपासक थे, को दान में दे दिया था। यह भूमि किसी भी राजा द्वारा घोषित करों से मुक्त थी। चूंकि एकमात्र सुमाड़ी के ग्रामीण ही सभी राजकीय करों से मुक्त थे, इसलिए यह व्यवस्था राजा के कुछ दरबारियों को फूटी आंख नहीं सुहाई। वहीं वजीर सुखराम काला से कुछ मतभेदों के चलते कई दरबारी भी असंतुष्ट थे। ऐसे में इन्होंने ही राजा को सुमाड़ी के लोगों पर भी 'कर' लगाने के अतिरिक्त अन्य राजकीय कार्यो को करने के लिए उकसाया। जिनमें दूणखेणी (बोझा ढोना) भी शामिल था। इसी काल में पूजा पर मेदनी शाह द्वारा दो अन्य कर स्यूंदी और सुप्पा भी लगाए गए। मेदनीशाह ने राजदरबारियों के कहने पर वजीर सुखराम काला से मशविरा कर सुमाड़ी की जनता को बोझा ढोने और राजकीय करों को सुचारु रूप राजकोष में जमा करने का फरमान जारी कर दिया। सुमाड़ी में जब यह फरमान पहुंचा, तो गांववासियों ने राजा का यह हुक्म मानने से मना कर दिया। इसे राजाज्ञा के प्रति दंडनीय अपराध मानते हुए राजा ने पुनः फरमान भेजा, कि जनता या तो राजकीय आदेश पर अति शीघ्र अमल करे या गांव को अति शीघ्र खाली करे। जब ग्रामीणों ने इन दोनों व्यवस्थाओं को भी मानने से इनकार कर दिया तो बौखलाहट में मेदिनी शाह ने दंडस्वरूप गांव वालों को प्रतिदिन एक आदमी की बलि देने के लिए फरमान भेज दिया। इस ऐतिहासिक दंड को आज भी 'रोजा' के नाम से जाना जाता है।

राजशाही का यह फरमान प्रजा के स्वाभिमान को भंग करने की एक साजिश थी, जिससे निरपराध ग्रामीण बोझा ढोने को तैयार हो जाएं। इस फरमान के आते ही गांव में आतंक फैल गया। ग्रामीण किंकर्तव्यविमूढ़ होकर फरमान मानने या गांव छोड़ने को विवश होने लगे। राजा के इन आदेशों से गांव वालों में मतभेद भी उभरने लगे। किंतु अंततः उन्होंने अपने स्वाभिमान को बचाने की खातिर रोजा देना उचित समझा।

इस घटनाक्रम के समय सुमाड़ी में अन्य जातियों के अलावा काला जाति के तीन प्रमुख परिवार उदाण कुटुम्ब, भगड़ एवं पैलू थे। जिनमें उदाण सबसे बड़े भाई का परिवार था। आज भी इन तीनों भाइयों के वंशज पितृ पूजा के अवसर

पर अपने पूर्वजों का नाम बड़ी श्रद्धा से लेते हैं। जिस परिवार को सबसे पहले रोजा देना था उस परिवार में कुल तीन लोग पति, पत्नी और एक अबोध बालक ही था। यह था पंथ्या के बड़े भाई का परिवार। पंथ्या इस सारे घटनाक्रम से अनभिज्ञ फरासू में अपनी बहन के साथ था।

लोकगीतों के अनुसार जिस दिन सुमाड़ी में पंथ्या के भाई के परिवार को रोजा देने के लिए नियुक्त किया गया, उस दिन पंथ्या फरासू में गायों को जंगल में चुगा रहा था। थकान लगने के कारण उसे जंगल में ही कुछ समय के लिए नींद आ गई। इसी नींद में पंथ्या को उनकी कुलदेवी मां गौरा ने स्वप्न में दर्शन देकर सुमाड़ी पर छाए भयंकर संकट से अवगत कराया। नींद खुलने पर पंथ्या ने देखा कि लगभग शाम होने वाली है। इसलिए वह तुरंत गायों को एकत्र कर घर ले गया और बहन से सुमाड़ी जाने की अनुमति लेकर अंधेरे में ही प्रस्थान कर दिया।

फरासू से सुमाड़ी के बीच में ये दोनों स्थान सौडू एवं जुगपठ्याली, पहाड़ की चढ़ाई चढ़ते समय विश्राम के ठौर थे। घर पहुंचकर पंथ्या को स्वप्न की सारी बातें सच होती हुई दिखी। उन्होंने राजा के इस थोपे हुए फरमान को प्रजा का उत्पीड़न मानते हुए इसके विरोध में आत्मदाह का ऐलान कर दिया। तत्पश्चात् ग्रामीणों को स्वाभिमान के साथ जीने की शिक्षा देकर अगले दिन इस वीर बालक पंथ्या ने मां गौरा के चरणों में अंतिम बार सिर नवाकर अग्निकुंड में अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस हृदयविदारक दृश्य को पंथ्या की चाची भद्रा देवी सहन न कर सकीं और उन्होंने भी तत्काल कुंड में छलांग लगा दी। इसी समय बहुगुणा परिवार की एक सुकोमल बालिका ने भी इसी अग्निकुंड में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। राजा मेदिनी शाह को जैसे ही इस दुःखद घटना से अवगत कराया गया, तो उन्होंने अगले तीन दिनों तक रोजा न देने का फरमान सुमाड़ी भेजा। इस घटना को लेकर प्रजा में जहां विद्रोह होने का डर राजा को सताने लगा वहीं संयोगवश इसी बीच राज परिवार दैवीय प्रकोपों के आगोश में भी तड़पने लगा। इन आकस्मिक संकटों से उबरने के लिए राजा ने राजतांत्रिक से सलाह मशविरा किया। राजतांत्रिक ने राजा को बताया कि यह दैविक विपत्तियां ब्रह्म हत्याओं और एवं निरपराध पंथ्या के आत्मदाह से उपजी हैं। अतः इन आत्माओं की शांति के लिए इनकी विधिवत् पूजा अर्चना करना आवश्यक है। विपत्ति में फंसे राजा ने तुरंत ही इस कार्य के लिए अपनी सहमति देकर यह कार्य संपन्न कराने के लिए तांत्रिक को सुमाड़ी भेज दिया।

जहां तांत्रिक ने परंपरागत वाद्यों के माध्यम से घड़याला लगाकर पंथ्या और उसके साथ आत्मोत्सर्ग करने वाली सभी पवित्र आत्माओं का आह्वान किया और उन सभी की प्रतिवर्ष विधिवत् पूजा अर्चना करने का वचन दिया। यह पूजा आज भी पूस के महीने में निर्बाध रूप से बड़ी श्रद्धा के साथ की जाती है। साधारणतया पितृपक्षों में सभी हिंदुओं द्वारा अपने पूजनीय पितरों को अन्न और जल अर्पित किया जाता है। लेकिन सुमाड़ी संभवतः ऐसा पहला गांव है, जहां पर पितृपक्ष के अतिरिक्त पूस में भी सामूहिक रूप से एक दिन का चयन कर बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति से अपने पूज्य पितरों की पूजा अर्चना अन्न एवं जल देकर की जाती है।

इसी कड़ी में पंथ्या काला राजशाही की निरंकुशता के खिलाफ आत्मदाह करने वाले प्रथम ऐतिहासिक बालक थे, जिन्हें सुमाड़ी की जनता का प्यार अविराम रूप से मिलता चला आ रहा है।

प्रस्तुति : डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग

मानवीय पहल

सखी वन स्टॉप सेंटर : एम्स ऋषिकेश

"पीड़ित महिलाओं के उपचार, कानूनी मदद व सम्मान की सुरक्षित छत"

यौन हिंसा केवल शरीर को नहीं, बल्कि मन, आत्मविश्वास और सामाजिक सुरक्षा की भावना को भी गहरी चोट पहुंचाती है। ऐसी परिस्थिति में पीड़िता के लिए चिकित्सा उपचार जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है उसे सुरक्षित वातावरण, कानूनी मार्गदर्शन और मानसिक संबल मिलना। अक्सर यौन हिंसा की पीड़ित महिलाओं को चिकित्सा जांच, मेडिको–लीगल प्रक्रिया, पुलिस अथवा कानूनी सहायता और मनोवैज्ञानिक परामर्श के लिए अलग–अलग स्थानों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। यह प्रक्रिया स्वयं उनके लिए एक अतिरिक्त मानसिक पीड़ा बन सकती है।

इसी संवेदनशील चुनौती को ध्यान में रखते हुए एम्स ऋषिकेश में 'सखी वन स्टॉप सेंटर' की शुरुआत एक महत्वपूर्ण और मानवीय पहल है। अस्पताल भवन की तीसरी मंजिल पर प्रसूति एवं स्त्री रोग वार्ड के सामने स्थापित यह केंद्र यौन हिंसा से पीड़ित महिलाओं और किशोरियों को एक ही छत के नीचे आवश्यक चिकित्सा एवं मेडिको–लीगल सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस केंद्र का उद्घाटन राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष विजया किशोर राहटकर ने उत्तराखंड राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष कुसुम कंडवाल और एम्स ऋषिकेश की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह की उपस्थिति में किया। यह पहल इस बात का संकेत है कि यौन हिंसा के मामलों में व्यवस्था का केंद्र अब केवल अपराध की जांच नहीं, बल्कि पीड़िता की गरिमा, सुरक्षा और पुनर्वास भी होना चाहिए। सखी वन स्टॉप सेंटर की सबसे बड़ी विशेषता इसका मल्टी–डिसिप्लिनरी और इंटीग्रेटेड मॉडल है। पीड़िता को जांच के लिए एक विभाग से दूसरे विभाग तक भटकना न पड़े, इसके लिए चिकित्सा, फोरेंसिक, मेडिको–लीगल और मनोवैज्ञानिक सहायता को एक समन्वित व्यवस्था में जोड़ने का प्रयास किया गया है। यह व्यवस्था न केवल समय बचाएगी, बल्कि पीड़िता को बार–बार अपनी पीड़ा दोहराने की मानसिक यातना से भी राहत दे सकती है। एम्स की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह द्वारा केंद्र को सुरक्षित, निजी, सम्मानजनक और गोपनीय वातावरण में मेडिको–लीगल जांच तथा आपातकालीन चिकित्सा देखभाल का केंद्र बनाए जाने की बात विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। क्योंकि यौन हिंसा के बाद पीड़िता को सबसे पहले यह भरोसा चाहिए कि उसे सुना जाएगा, उस पर विश्वास किया जाएगा और उसकी पहचान तथा गरिमा की रक्षा की जाएगी। सखी वन स्टॉप सेंटर की सफलता केवल उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाओं की संख्या से नहीं मापी जानी चाहिए। इसकी वास्तविक सफलता तब होगी, जब किसी पीड़िता को भय, संकोच या सामाजिक दबाव के कारण मदद लेने से पीछे न हटना पड़े। जब उसे यह विश्वास हो कि अस्पताल उसके लिए केवल उपचार का स्थान नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में सुरक्षा और सहारे का स्थान भी है। यह पहल समाज के लिए भी एक संदेश है। यौन हिंसा के विरुद्ध लड़ाई केवल कानून और पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है। अस्पताल, प्रशासन, महिला आयोग, न्याय व्यवस्था और समाज को मिलकर ऐसा वातावरण बनाना होगा, जहां पीड़िता को दोषी ठहराने के बजाय उसे न्याय और सम्मान दिलाने का प्रयास हो। एम्स ऋषिकेश का 'सखी वन स्टॉप सेंटर' इसी दिशा में एक उम्मीद जगाता है। उम्मीद इस बात की, कि किसी महिला की जिंदगी के सबसे कठिन क्षण में व्यवस्था उसके सामने दीवार बनकर नहीं, बल्कि सहारा बनकर खड़ी हो।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उप संपादक

उत्तराखंड की बेटी पावनी छाबड़ा बनीं 'मिस टीन टूरिज्म ग्लोब 2026'

देहरादून की प्रतिभाशाली युवती पावनी छाबड़ा ने प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता 'मिस टीन टूरिज्म ग्लोब 2026' का खिताब जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है। इस भव्य प्रतियोगिता का आयोजन श्रीलंका में एक प्रतिष्ठित फिलीपीन अंतरराष्ट्रीय संस्था के तत्वावधान में किया गया। पावनी ने अपने समर्पण, आत्मविश्वास और मेहनत के दम पर वैश्विक मंच पर भारतीय संस्कृति और युवाशक्ति का शानदार प्रदर्शन किया। उनकी इस उपलब्धि से न केवल भारत बल्कि उत्तराखंड को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरव प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता में जापान, रूस, दुबई, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), फिलीपींस सहित कई देशों की प्रतिभागियों ने भाग लिया। पावनी ने अपने व्यक्तित्व, प्रस्तुति और भारतीय परंपराओं के प्रभावशाली प्रदर्शन से सभी को प्रभावित करते हुए यह प्रतिष्ठित ताज अपने नाम किया। देहरादून की पहाड़ियों से अंतरराष्ट्रीय मंच तक का उनका सफर कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और सपनों को साकार करने का प्रेरणादायक उदाहरण है। पावनी ने बताया कि वह अब 'मिस यूनिवर्स' प्रतियोगिता की तैयारी कर रही हैं। उन्होंने कहा कि उनका सपना मॉडलिंग और अभिनय के क्षेत्र में सफल करियर बनाना है। वर्तमान में उनके पास कई नए प्रोजेक्ट हैं और उनकी एक फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी है, जो फिलहाल पोस्ट–प्रोडक्शन में है।

उनके समर्थकों का कहना है कि 'मिस टीन टूरिज्म ग्लोब 2026' का खिताब जीतकर पावनी ने यह साबित कर दिया है कि छोटे शहरों की प्रतिभाएं भी विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना सकती हैं। उनकी यह सफलता भारत के युवाओं की प्रतिभा और आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा उत्तराखंड की समृद्ध संस्कृति और युवा शक्ति को वैश्विक मंच पर नई पहचान दिलाने वाली उपलब्धि है।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

पुस्तक समीक्षा

उम्मीदों के सिक्के

स्वर्णिम भावों एवं आशा की कविताओं का संग्रह

(रचयिता-डॉ.राजेश कुमार जैन)

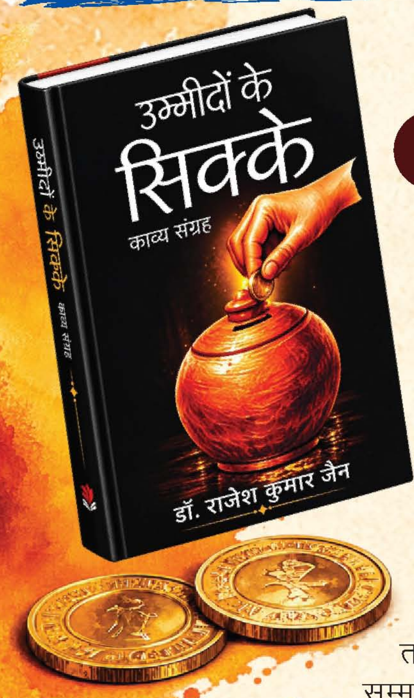

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, समाज शास्त्र, पत्रकारिता एवं जनसंचार, मानव विज्ञान तथा विधि सहित कई विषयों में दक्ष, प्रथम 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' तथा 'उत्तराखण्ड रत्न सम्मान प्राप्त लेखक डॉ. राजेश कुमार जैन की कविताओं का नवीन संग्रह 'उम्मीदों के सिक्के' उनके स्वर्णिम भावों एवं आशा की 155 कविताओं का संग्रह है जिसमें अधिकांश कविताएँ अतुकांत हैं। इस कविता संग्रह के माध्यम से डॉ. जैन ने मानव बुद्धि की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं को भावों के बहुरंगी पिटारे में सँजो कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है।

'माँ शारदे को प्रथम नमन' करते हुए डॉ. जैन इस कविता संग्रह का शुभारंभ करते हैं। अगली कविता 'परवरिश' के माध्यम से डॉ. जैन मानव जीवन में पालन पोषण की महती भूमिका को तथा उसके भावनात्मक स्वरूप को रेखांकित करते हैं। इस संग्रह में पिता तथा माँ को समर्पित अन्य 7 कविताएँ पाठकों को इसी भाव से जोड़े रखती हैं। पारिवारिक तथा सामाजिक सम्बन्धों की आधारभूत भावनाओं को उकेरती हुई कविताएँ जैसे 'कुछ टूट रहा परिवारों में', 'आओ मिलकर सब को जोड़ें', 'पति–पत्नी, 'कुछ जाने अनजाने रिश्ते, 'तुम मेरा जीवन', 'प्यारी बहना, 'मित्रता', 'जीवन सूना बिना तुम्हारे, 'अन्नपूर्णा हो तुम घर की' 'प्यार सबको जोड़ता है, 'हम चलें साथ में, 'धागा', 'चलें हम साथ–साथ' इस संग्रह के माध्यम से पाठकों को पारिवारिक एवं सामाजिक संस्कृति के विशुद्ध भारतीय स्वरूप से जोड़ती हैं। इस कविता संग्रह में संकलित 'उम्मीद के सिक्के' और 'उम्मीदों की उम्मीद' जैसी कविताएँ डॉ. जैन की आशा–सरिता का प्रतिबिंब हैं। उनका हृदय कमियों को भी सुधार की उम्मीद भरी दृष्टि से देखता है. प्यार और पूर्णता की आस में धड़कता है, सभी के लिए उनकी दृष्टि सम्पन्नता का सपना सँजोती है। उनके ये भाव संवेदनशील शीर्षकों से खुलती कविताओं जैसे 'आशा', 'अभिलाषा', 'दिल का नाता', 'प्रेम और स्पर्श', 'संवेदनाएँ, राष्ट्र सर्वोपरि है', 'निराला सपनों का संसार', 'आओ जल्दी–जल्दी चलें हम,' 'बिन ठोकर के अक्ल न आती', 'पर निंदा, देश को और न बँटने देंगे, 'क्रोध नहीं आप कीजिए, 'बहुत गड़बड़झाला है', 'तू मुस्कराकर चल मुसाफिर', 'उनको सबक सिखाना होगा', 'मजदूर हैं हम, तू फूलों सा मुस्काता चल' में प्रमुखता से प्रकट होते हैं।

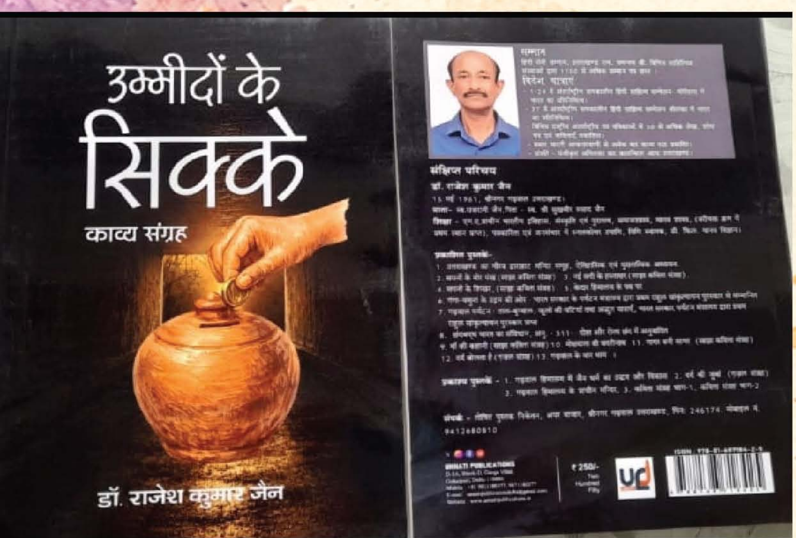

समालोचना, लेखन की शैली, छंद ज्ञान और तकनीक की समझ रखने वाला गंभीर पाठक यदि यह प्रश्न करे कि इस कविता संग्रह का आकर्षण तत्व क्या है ? पाठक को इस पुस्तक का कौन सा पक्ष प्रभावित करता है ? चूँकि यह पुस्तक छंदबद्ध नहीं है अतः छंद के आल्हाद का खोजी इस पुस्तक में क्या पाएगा? कविताओं की सीधी–सपाट और सरल शब्दावली एवं भावानुक्रम अत्यधिक सरलीकृत होने के कारण नाटकीयता तथा शब्द शिल्प के शौकीन को रूखे या अधूरे से क्यों ना लगेंगे ? क्या इन कविताओं का तकनीकी पक्ष पाठक को ऐसा अनुभव भी करा सकता है कि ये कविताएँ किसी विद्वान साहित्यकार ने नहीं बल्कि किसी बच्चे ने लिखी हैं? मेरी दृष्टि में इस कविता संग्रह की कविताएँ यह आह्वान करती हैं कि हमें पढ़ो और स्वयं से जुड़ो, किसी बच्चे की तरह। यह संग्रह किसी अल्पज्ञ पाठक को लेखन की भव्यता की ओर ले जाता है। भारतीय उत्सवों के विविध रंगों की छटा प्रस्तुत करने के साथ–साथ, यह पुस्तक प्रकृति प्रेम तथा डॉ. जैन के व्यक्तिगत मनोभावों का भी संकलन है जहाँ वे प्रेम को नारी शक्ति के हृदय पर आश्रित पाते हैं। 'प्रिये तुम विधना का उपहार', 'तुम मेरा मौन हो', 'प्रेयसी की बातें',

'तेरी आँखें मुझे बुलाती हैं', 'नारी शक्ति', 'नारी तू नारायणी', 'प्रेम दीवानी राधा', 'उत्सव के रंग', 'ऋतुराज बसंत', 'बसंत के रंग', 'बसंत का सुख मत चूक', 'अब पहले जैसा कहाँ बसंत', 'रंगों का त्यौहार है होली', 'फागुन के आते ही', 'मिलकर खेलें हम होली', 'होली के रंग आपके संग', 'नदिया की धारा', 'बादल और बारिश', 'हवा', 'बादल', 'पानी', 'रिमझिम वर्षा, 'बरसात', 'सावन की घटाएँ' 'पर्यावरण', 'प्रकृति से प्रेम' जैसी कविताएँ उनकी इन्हीं अभिव्यक्तियों को पाठकों तक पहुँचाती हैं। बच्चों के भोले मनोभावों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती बाल कविताएँ तथा छंदोबद्ध रचनाएँ जैसे 'तितली रानी', 'तिन्ना छंद मेरी बिटिया' 'तिन्ना छंद-बाल कविता', 'सायली छंद' 'चीं-चीं करती चिड़िया', 'मयंक', तथा महापुरुषों के जीवन को, उनके अतुलनीय योगदान को उभारती रचनाएँ जैसे 'चंद्रशेखर आजाद', 'ईश्वर चंद्र विद्यासागर', 'मुंशी प्रेमचंद' इस कविता संग्रह के वृहद कैनवास तथा विशाल उद्देश्य को प्रमाणित करते हैं। मुझ अल्पज्ञानी का यह सौभाग्य है कि डॉ. जैन ने इस कविता संग्रह के मुख्य भाव तथा शीर्षक के चयन एवं प्रस्तावना हेतु मुझे अवसर प्रदान किया। मेरी प्रार्थना है कि जिस आध्यात्मिक सत्ता को साक्षी मानते हुए डॉ. जैन ने 'हे माँ शारदे', 'हे कृष्ण मुरारी', 'शिव शंकर भोले', 'राम लीला', 'सब कठपुतली हैं ईश्वर की, 'कान्हा तेरी बाँसुरिया', 'साँवरे की मर्जी से चलता है जग सारा' जैसी कृतज्ञ अभिव्यक्तियों के रूप में इस कविता संग्रह को सम्पूर्ण समर्पण से पाठकों तक पहुँचाया वह सदैव फलदायक तथा चिर प्रासंगिक रहे।

समीक्षक -:
डॉ. दीपक कुमार द्विवेदी
श्रीनगर (गढ़वाल)

सृजन

लोकगायक नरेंद्र सिंह नेगी के गीत अब अंग्रेजी में भी

उत्तराखंड के गढ़रत्न एवं प्रसिद्ध लोकगायक नरेंद्र सिंह नेगी के गीतों ने दशकों से पहाड़ के जनजीवन को स्वर दिया है। अब इन्हीं गीतों की संवेदना अंग्रेजी भाषा के माध्यम से वैश्विक पाठकों तक पहुंचने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हुई है। रस्किन बॉन्ड फाउंडेशन के तत्वावधान में संस्कृति विभाग के ऑडिटोरियम में नरेंद्र सिंह नेगी के गीतों के अंग्रेजी अनुवाद पर आधारित पुस्तक 'गुंथे हुए भाव' (Bradded Emotions) का विमोचन हुआ। पुस्तक के अनुवादक शिक्षक व लेखक मुकेश लाल हैं। यह प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है। नरेंद्र सिंह नेगी के गीतों में पहाड़ की मिट्टी की खुशबू है, गांव की पगडंडियों की स्मृतियां हैं, बदलते सामाजिक परिवेश की चिंता है और आम पहाड़ी मनुष्य के सुख-दुख की सच्ची तस्वीर है। उनके गीतों में लोकभाषा के साथ-साथ उत्तराखंड की परंपराएं, रिश्ते, प्रकृति और सामाजिक सरोकार भी गहराई से अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे में इन रचनाओं का अंग्रेजी रूपांतरण उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत को उन पाठकों तक पहुंचाने का माध्यम बन सकता है, जो गढ़वाली लोकभाषा से सीधे परिचित नहीं हैं। संस्कृति विशेषज्ञ एवं शिक्षाविद् प्रो.डी.आर. पुरोहित ने इस बात पर जोर दिया कि किसी लोक रचना का अनुवाद करते समय उसके मूल भाव, परिवेश और सांस्कृतिक अर्थ को बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती होती है। यही चुनौती इस पुस्तक को सामान्य अनुवाद से आगे ले जाती है। नरेंद्र सिंह नेगी के गीतों का अंग्रेजी अनुवाद संवाद का एक सेतु है। गढ़वाल की लोकधुनों से वैश्विक साहित्यिक संसार तक का सेतु। यदि यह पहल व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचती है, तो यह केवल नेगी के गीतों का विस्तार नहीं होगा, बल्कि उत्तराखंड की लोकभाषा, लोकसंस्कृति और सामूहिक स्मृतियों के लिए भी अंतरराष्ट्रीय पहचान का नया द्वार खोलेगा। इस सार्थक पहल के लिए अनुवादक मुकेश लाल को बधाई दी जानी चाहिए। निश्चित रूप से 'गुंथे हुए भाव' उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत को भाषा की सीमाओं से बाहर ले जाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रस्तुति : अमन तलवाड़, सह संपादक

मुख्यमंत्री युवा विद्यार्थी मंथन कार्यक्रम

उत्तराखंड के भविष्य पर विद्यार्थियों की सीधी बात

उत्तराखण्ड के विकास की दिशा तय करने में अब प्रदेश के युवा केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार बनेंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में आयोजित 'मुख्यमंत्री युवा विद्यार्थी मंथन' कार्यक्रम में प्रदेश के हजारों विद्यार्थियों से सीधे संवाद करते हुए युवाओं की सोच, सुझाव और आकांक्षाओं को उत्तराखण्ड के भविष्य की विकास नीति से जोड़ने का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने 'मुख्यमंत्री युवा विद्यार्थी मंथन' पोर्टल का शुभारंभ किया और विद्यालयी छात्र–छात्राओं के लिए 'मेरे सपनों का उत्तराखण्ड' एक विकसित राज्य हेतु मेरा दृष्टिकोण' विषय पर निबंध प्रतियोगिता की शुरुआत की।

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रदेश के 140 विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। चयनित छात्र–छात्राओं की NEET, JEE, CLAT, SAT जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग तथा अन्य आवश्यक शुल्कों का वहन राज्य सरकार करेगी। यह पहल केवल प्रतिभा सम्मान तक सीमित नहीं, बल्कि आर्थिक संसाधनों की कमी के बावजूद प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का अवसर देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम में प्रदेश के 2828 सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 11वीं और 12वीं के तीन लाख से अधिक विद्यार्थियों ने वर्चुअल माध्यम से सहभागिता की। मुख्यमंत्री से संवाद के दौरान विद्यार्थियों ने खेलों को बढ़ावा देने, सप्ताह में चार दिन खेल पीरियड आयोजित करने, विद्यालयों में उपलब्ध अवसरों का विस्तार करने, उच्च शिक्षा में उत्तराखण्ड को अग्रणी बनाने, पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने तथा विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों के सुझावों को गंभीरता से लेते हुए उन्हें स्वयं नोट किया और अधिकारियों को इन सुझावों के अनुरूप कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की सोच और सुझावों को सरकार की नीतियों में भी शामिल किया जाएगा। यह संवाद इस मायने में महत्वपूर्ण है कि इसमें नई पीढ़ी को केवल

योजनाओं का लाभार्थी नहीं, बल्कि नीति निर्माण की प्रक्रिया का सहभागी बनाने का प्रयास दिखाई देता है।

नंबर नहीं, विषय की समझ जरूरी

मुख्यमंत्री ने कहा कि छात्र–छात्राएं देश का वर्तमान और भविष्य हैं। उन्हें अपने सपनों को साकार करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को परीक्षा में केवल अधिक अंक प्राप्त करने के बजाय विषय की गहरी समझ विकसित करने की सलाह दी। उनके अनुसार जीवन में संस्कार और अनुशासन सफलता की मजबूत नींव हैं। विद्यार्थियों को पढ़ाई के तरीके में बदलाव लाने की आवश्यकता है। पढ़ाई को बोझ समझने के बजाय उसे अपने भविष्य को संवारने का माध्यम माना जाना चाहिए। विद्यार्थी अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने का प्रयास करें, क्योंकि वास्तविक नेतृत्व वही है जो अपने काम से उदाहरण प्रस्तुत करे।

'संकल्प ऐसा हो जिसमें कोई विकल्प न हो'

मुख्यमंत्री ने युवाओं से लक्ष्य के प्रति निरंतर प्रयास करने और चुनौतियों से सीख लेकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जीवन में संकल्प लेना जरूरी है, लेकिन ऐसा संकल्प जिसमें कोई विकल्प न हो। जब व्यक्ति अपने लक्ष्य को लेकर पूरी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ता है तो सफलता की राह भी तेजी से खुलती है। सफलता केवल स्वयं आगे बढ़ने में नहीं, बल्कि दूसरों को आगे बढ़ाने में है। प्रतिभा, ऊर्जा और सामर्थ्य का सकारात्मक उपयोग समाज और प्रदेश के विकास में किया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति की पहचान उसके नाम से नहीं, बल्कि उसके कार्य, समाज के प्रति संवेदनशीलता और अपने दायित्व के प्रति समर्पण से बनती है।

AI उपयोगी है, लेकिन सोच का विकल्प नहीं

नई तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग तभी किया जाना चाहिए, जब वास्तव में उसकी आवश्यकता हो। तकनीक ज्ञानवर्धक और उपयोगी है, लेकिन उसके अत्यधिक उपयोग के दुष्परिणाम भी हो सकते हैं। किसी भी विषय पर सबसे पहले अपनी बुद्धि, विवेक और सोचने की क्षमता का इस्तेमाल करें। गुरुजनों के मार्गदर्शन और अनुभव से सीखें और इसके बाद आवश्यकता पड़ने पर AI की सहायता लें। तकनीक हमारी सहयोगी होनी चाहिए, हमारी सोचने और सीखने की क्षमता का विकल्प नहीं।

पढ़ाई के साथ खेल भी जरूरी

पढ़ाई के साथ खेल भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय खेलों के सफल आयोजन से युवाओं और समाज में खेलों के प्रति नई जागरूकता पैदा हुई है। आज प्रदेश के विद्यार्थी खेलों को भी अपने भविष्य के रूप में देख रहे हैं और विभिन्न खेल विधाओं में आगे बढ़ने के लिए मेहनत कर रहे हैं। राज्य सरकार की मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। विद्यार्थियों द्वारा सप्ताह में चार दिन खेल पीरियड आयोजित करने सहित खेलों से जुड़े दिए गए सुझावों को भी इसी व्यापक सोच से जोड़कर देखा जा सकता है।

नई पीढ़ी की सोच से परिचित होने का दावा

मुख्यमंत्री ने कहा कि वे विद्यार्थियों की सोच, उनकी आकांक्षाओं और भविष्य को लेकर उनके मन में चल रहे विचारों से भली–भांति परिचित हैं। उन्होंने अपने परिवार में जेन अल्फा और जेन जी पीढ़ी के होने का उल्लेख करते हुए कहा कि वे नई पीढ़ी की सोच, रुचियों और भविष्य को लेकर उनकी आकांक्षाओं को करीब से समझते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को भरोसा दिलाया कि सरकार और युवाओं के बीच संवाद का रास्ता हमेशा खुला रहेगा। छात्र अपनी समस्याएं, सुझाव और विचार खुलकर सरकार के सामने रख सकते हैं। युवाओं की बात सुनने और उनके सुझावों पर विचार करने के लिए सरकार हमेशा तत्पर है।

युवा मंथन से नीति तक–अब असली परीक्षा क्रियान्वयन की

'मुख्यमंत्री युवा विद्यार्थी मंथन' का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यही है कि प्रदेश के लाखों विद्यार्थियों की आवाज को विकास के विमर्श से जोड़ा गया है। 'मेरे सपनों का उत्तराखण्ड' जैसी पहल युवाओं को यह अवसर देती है कि वे अपने प्रदेश को केवल वर्तमान की नजर से नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं के साथ देखें। इस मंथन की सफलता का वास्तविक पैमाना यही होगा कि विद्यार्थियों द्वारा दिए गए सुझाव कितनी गंभीरता से नीतियों और योजनाओं में दिखाई देते हैं। खेल, शिक्षा, उच्च शिक्षा, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण और तकनीक जैसे विषयों पर युवा पीढ़ी की सोच को यदि ठोस कार्ययोजना में बदला जाता है तो यह पहल उत्तराखण्ड के विकास को नई दिशा दे सकती है।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उप संपादक

ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी

सौहार्द : भारत के संविधान की चित्रकृतियों की प्रदर्शनी

ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी, देहरादून के ललित कला विभाग द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली के कला दर्शना प्रभाग तथा संस्कार भारती, उत्तराखंड के संयुक्त तत्वावधान में 'सौहार्द भारत के संविधान की चित्रकृतियों के प्रिंट्स की प्रदर्शनी' का भव्य उद्घाटन 5 अगस्त को के. पी. नौटियाल ऑडिटोरियम, ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी, देहरादून परिसर में किया गया। राष्ट्रीय स्तर की यह प्रदर्शनी 07 अगस्त तक दर्शकों के लिए खुली रही। प्रदर्शनी का शुभारंभ पद्मश्री सम्मानित प्रख्यात लोकगायिका एवं संगीतकार श्रीमती माधुरी बर्थवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। इस अवसर पर संस्कार भारती, उत्तराखंड की प्रदेश अध्यक्ष एवं देहरादून कैंट की विधायक श्रीमती सविता कपूर, संस्कार भारती के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. गिरीश चंद्र शर्मा, आईजीएनसीए, नई दिल्ली के कला दर्शना प्रभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) ऋचा कंबोज, ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रो. (डॉ.) तबस्सुम नकवी, कुलसचिव प्रो. (डॉ.) ज्योति छाबड़ा, डीन अकादमिक प्रो. (डॉ.) प्रमोद एस. नायर, ललित कला विभागाध्यक्ष डॉ. आनंद कर्माकर, प्रदर्शनी के सह–समन्वयक एवं सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिर्बाण धर सहित विश्वविद्यालय के डीन, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकगण, छात्र–छात्राएँ, कलाकार, विशिष्ट अतिथि एवं मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित रहे। इस प्रदर्शनी में भारत के संविधान से प्रेरित चित्रकृतियों के प्रिंट्स प्रदर्शित किए गए हैं, जो संविधान के मूल्यों, लोकतांत्रिक आदर्शों, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विविधता तथा 'अनेकता में एकता' की भावना को प्रभावशाली कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। ये कलाकृतियाँ संविधान के सिद्धांतों, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। उद्घाटन समारोह के दौरान वक्ताओं ने प्रदर्शित कलाकृतियों की कलात्मक उत्कृष्टता एवं वैचारिक गहराई की सराहना करते हुए कहा कि कला संविधान के प्रति जागरूकता, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक सौहार्द को बढ़ावा देने का एक प्रभावशाली माध्यम है, विशेषकर युवाओं के लिए। कार्यक्रम के दौरान सभी अतिथियों को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी एवं संस्कार भारती, उत्तराखंड की ओर से संयुक्त रूप से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का समापन ललित कला विभागाध्यक्ष डॉ. आनंद कर्माकर द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस प्रदर्शनी ने विद्यार्थियों, शिक्षाविदों, कलाकारों एवं आम नागरिकों को भारत के संविधान के मूल्यों तथा देश की सांस्कृतिक विरासत को कला के माध्यम से निकट से समझने और अनुभव करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान किया।

प्रस्तुति –: प्रो.(डॉ.) कंचन सिंह, विभागाध्यक्ष भूगोल, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला, देहरादून